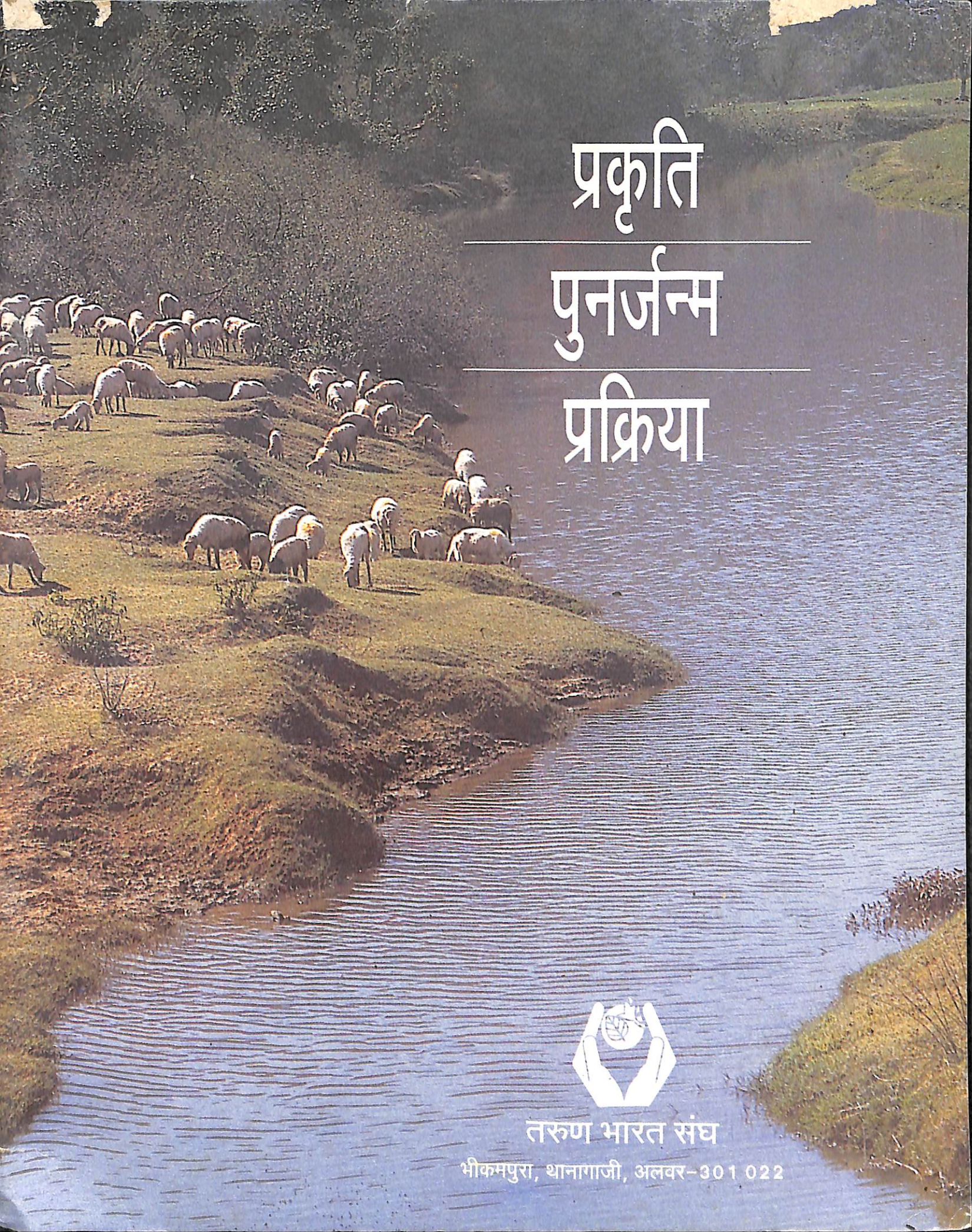

प्रकृति पुनर्जन्म प्रक्रिया

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा, थानागाजी, अलवर-301 022

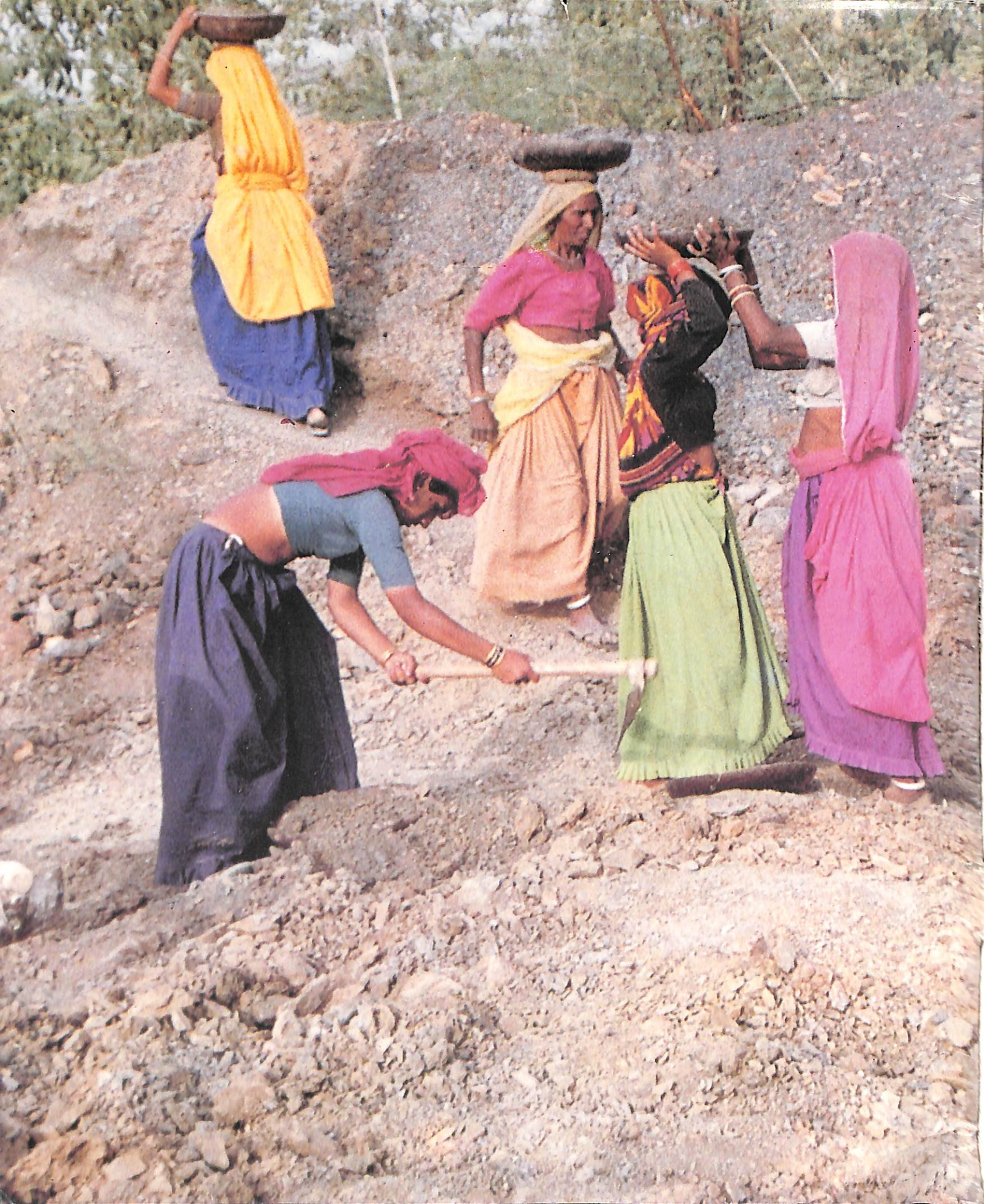

तरुण भारत संघ

1998-99

वर्ष 1998-99 बहुत ही चुनौतीपूर्ण व सफलताओं से भरा रहा। विगत 14 वर्षों में संघ का कार्य क्षेत्र 700 गांवों में फैल गया है। अब तक 3000 से भी अधिक जल एकत्र करने वाली संरचनाओं का निर्माण हमारे समाज के सक्रिय सहयोग से हो चुका है। इस वर्ष अरवरी संसद का गठन तथा राजस्थान की वैकल्पिक जल नीति दस्तावेज का निर्माण करके उसे लागू कराने का प्रयास किया है। जल-जंगल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के साथ-साथ देश के दूसरे हिस्से से, संघ के कार्यों को देखने समझने वाले लोगों का तांता वर्ष भर लगा रहा। तभासं व लोगों के सहयोग से क्षेत्र में पुन: जीवित हुई पाँच नदियों (अरवरी, सरसा, रूपारेल, जहाजवाली, भगाणी-तिलदेह) ने जहाँ संघ के कार्यकर्ताओं के मनोबल को बहुत ऊँचा किया, वहीं देश-विदेश के बुद्धिजीवियों, पर्यावरण वैज्ञानिकों व समाजसेवियों का ध्यान संघ के कार्यों की तरफ लगाया। 'दी वीक' नामक पत्रिका ने संघ के महामंत्री को "Man of the year" का खिताब दिया। "इंडिया टुडे" ने चमत्कारी पुरुष कहा; तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने संघ के कार्यों पर एक पुस्तक प्रकाशित करते हुए, इस काम को दुनिया में चल रहे विकास कार्यों में सबसे अच्छा (Best Practice) बताया। परम्परागत जल संरक्षण तन्त्र व तकनीक के आधार पर किये गये कार्यों व प्रयोगों की प्रत्यक्ष सफलता को पूरे भारतवर्ष ही नहीं विश्व के अनेक देशों से वाटरसैड अथवा जलागम विकास का काम करने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधि देखने आये। ग्रामीण, सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओं के कार्यकर्ता जो तरुण भारत संघ में काम देखने आये उनकी कुल संख्या बाईस हजार से ज्यादा है।

वर्तमान समय में जल संकट के निवारण के मूलतन्त्र 'जोहड़' की तरफ सभी लोगों का ध्यान इसके प्रभाव के कारण अनायास ही चला जाता है। श्रमदान अर्थात् कार्यों में लोगों की हिस्सेदारी को संस्थाओं, सरकारी व गैर सरकारी संगठनों सभी ने एक मत से स्वीकार किया। संघ द्वारा अपनायी गई श्रमदान-विधि को, कार्यों के स्थायित्व हेतु आवश्यक अंग के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। मूल रूप से तो तरुण भारत संघ का मुख्य कार्य, पारम्परिक तकनीक द्वारा जल, जंगल व जमीन संरक्षण व संवर्द्धन द्वारा ग्राम स्वावलम्बन पर केन्द्रित रहा है।

सभी कार्यक्रमों में हमारे समाज के साथ इक्को, सीडा, आई सी, आक्सफेम, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, लोक जुम्बिश परिषद्, एस.डी.सी. आदि दानदात्री संस्थाओं ने भी आर्थिक मदद की है। यह मदद समाज की जरूरत के अनुसार ही हम सहजता से प्राप्त कर सके हैं। समाज ने इस मदद में आई राशि को अपनी राशि मानकर अच्छे प्रकार से उपयोग किया है। समाज की साधना के कारण यह राशि समाज के अपने साध्य को प्राप्त करने में सफल साधन बनी है। अत: साधनदाता के प्रति भी सम्मान जताते हुए, अब हमारा समाज स्वयं एक-दूसरे का मददगार बन

रहा है। इसी से यहाँ प्रकृति पुनर्जनन योग्य बनी है। इस प्रक्रिया से ही हमारे सामलाती प्राकृतिक संसाधनों का पुर्नजन्म समृद्ध होने लगे हैं। इसी से हमारी ग्राम स्वावलम्बन की कल्पना साकार हो रही है।

वर्ष 1998-99 में हुए कार्यों की सूची :

1. जलसंरक्षण (जोहड़ निर्माण)
2. जलसंरक्षण कार्यों से सीखना-सिखाना
3. लोक समिति/ ग्राम सभा निर्माण
4. शिशु पालना गृह संचालन
5. जंगल व जंगली जीव संरक्षण कार्यक्रम
6. चेतनात्मक कार्यक्रम-दीवार लेखन, शिविर, सम्मेलन, जन सम्पर्क, शैक्षणिक भ्रमण, कार्यशाला, पदयात्राएँ, पर्चा पोस्टर पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तक-पुस्तिकायें फिल्म निर्माण आदि।
7. महिला समूह व संगठन निर्माण
8. सबको शिक्षा कार्यक्रम
9. कार्यकर्ता निर्माण
10. स्वास्थ्य कार्यक्रम (आयुर्वेदिक पद्धति)
11. खनन क्षेत्र में वैकल्पिक रोजगार
12. पशु स्वास्थ्य व नस्ल सुधार
13. जैविक विविधता संरक्षण
14. बालश्रम मुक्ति कार्यक्रम
15. देशज एवं परम्परागत तकनीकी का दस्तावेजीकरण कार्यक्रम
16. वैकल्पिक जल नीति निर्माण
17. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत निर्माण
18. सरकार के साथ मिलकर काम करने का अनुभव प्राप्त करना-पावड़ी परियोजना चलाना।
19. अन्न सुरक्षा अभियान
20. केश स्टडी निर्माण
21. देशी बीज-संरक्षण एवं सेन्द्रीय खाद निर्माण कार्यक्रम
22. नेटवर्किंग कार्यक्रम
23. शोध व अध्ययन कार्य
24. भौतिकवाद, आधुनिकता व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विरोध
25. संयुक्त वन प्रबंधन
26. स्वरोजगार-कताई, बुनाई

इस वर्ष उक्त सब कार्यों के साथ केन्द्रीय कृषि मंत्री व जलसंसाधन मंत्री का दो दिन तरुण भारत संघ कार्य क्षेत्र में रहकर कार्यों को देखना-समझना तथा इस कार्य को देश के दूसरे हिस्सों में फैलाने में मदद करने का वायदा साथ ही भारत की जल नीति निर्माण कराने में तरुण भारत संघ की मदद मांगना मुख्य है। तरुण भारत संघ जल संसाधन को समाज की सम्पत्ति मान कर समाज को जल प्रबंधन में दायित्वपूर्ण भागीदारी दिलाने तथा समाज के जत्व अधिकार की बुनियादी बहस शुरू कराने हेतु प्रयासरत है।

तरुण भारत संघ

1998-99 का घटनाचक्र

अप्रैल :

1 अप्रैल, 98 को गुवाडा माली में तीन परिवारों के घर जल गये थे। उनकी सहायता हेतु संस्था ने टीनसैड के लिये टीन चादरें दीं।

17 से 19 अप्रैल तक एक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में देश के लगभग 90 पर्यावरणविदों ने भाग लिया। जल, जंगल, जमीन, वन्य अभयारण्य से विस्थापितों की समस्याओं पर गहन चर्चाएं हुईं। इस विचार गोष्ठी में भारत सरकार, राजस्थान सरकार के संबंधित विभागों के उच्च अधिकारियों ने भाग लिया।

20 से 22 अप्रैल को तरुण आश्रम में दक्षिण देशों में पर्यावरण के क्षेत्र में कार्यरत N.G.O. के साथ एक विचार गोष्ठी की। इस विचार गोष्ठी में नेपाल, पाकिस्तान, इंग्लैण्ड, भारत, बांग्लादेश, अफ्रीका के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

मई-जून :

साक्षरता अभियान के तहत संस्था के कार्यकर्ताओं ने 10-12 कक्षाओं के युवाओं को अपने गांव के अनपढ़ भाई/बहिनों को पढ़ाने के लिये प्रेरित किया जिससे गांव के युवाओं में एक प्रकार से संवेदना जाग्रत हुई है। युवाओं का सामाजिक कार्यों में रुझान बढ़ा।

2 मई को देश भर के जल विशेषज्ञों का तरुण भारत संघ के कार्यक्षेत्र में भ्रमण कराया। उन्होंने नदियों को पुनर्जीवित होते देखा। इसमें भारत सरकार के वैप्कोस के अध्यक्ष/ निदेशक श्री पी.एल.दीवान, मुख्य अभियंता श्री आर.के. गुप्ता, वन अधिकारी, इन्जीनियर, मीडिया, राजनेता सभी प्रकार के लोग भागीदार हुए।

जुलाई :

27 जुलाई, 98 को "इण्डिया टुडे" ने तरुण भारत संघ के संचालक को Miracle Man की उपाधि दी और काम पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की।

संस्था के कार्यकर्ताओं द्वारा "पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ" पदयात्रा आयोजित की गई तथा संस्था ने अपनी पौधशाला से तथा सरकार से पौधे प्राप्त करके उपयुक्त स्थानों पर लगवाये। पावड़ी परियोजना के अन्तर्गत फलदार, छायादार पौधे बांटे। इक्को द्वारा संचालित परियोजना के अन्तर्गत चरागाह विकास कार्यक्रम किये गये। देवबनी, रखतबनी आदि के संरक्षण का अभियान चलाया।

अगस्त :

9 अगस्त को वाणी मन्दिर, जयपुर में तरुण भारत संघ के लिये भरत झुनझुनवाला द्वारा किये गये अध्ययन, राजस्थान की वैकल्पिक जलनीति के ड्राफ्ट पर एक विचार संगोष्ठी आयोजित की। इसमें भारत सरकार, राजस्थान सरकार के उच्च अधिकारी, राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि ग्रामीणजन, जलसंरक्षण क्षेत्र में कार्य करने वाले वरिष्ठ विद्वानों ने भाग

लिया। संगोष्ठी में मुख्य रूप से श्री मिठ्ठालाल मेहता, श्री सिद्धराज ढढ्ढा, भारत की जल संसदीय समिति के सदस्य श्री दुरु मियां, सुरेन्द्र मोहन, अनुपम मिश्र, गुरुदास अग्रवाल, भाजपा के कई नेता भागीदार रहे।

सितम्बर :

सितम्बर माह में भरत झुनझुनवाला द्वारा राजस्थान की वैकल्पिक जलनीति की अन्तिम रिपोर्ट संस्था को दी गई। जिसे संस्था ने राजस्थान सरकार, भारत सरकार व अन्य वरिष्ठ व्यक्तियों को दी।

अक्टूबर :

1-3 अक्टूबर तक संस्था में पर्यावरणीय प्रेमी पुरस्कार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 150 व्यक्तियों को जो कि संस्था के कार्यक्षेत्र में अपने गाँव के प्राकृतिक संसाधनों को बचाने व संवर्धन करने हेतु पुरस्कृत किया। इस अवसर पर संस्था की साधारण सभा भी आयोजित होती है। इस वर्ष लगभग 700 सम्माननीय सदस्य शामिल हुए।

29-30 अक्टूबर को अनिल अग्रवाल ने संस्था के जल संरक्षण कार्यों को देखा तथा कार्यक्षेत्र में जन सभाओं को भी सम्बोधित किया।

31 अक्टूबर को संस्था के जल संरक्षण कार्यकर्ताओं को अनिल अग्रवाल ने सम्मानित किया। इसी दिन देवउठनी ग्यारस को "पानी बचाओ - जोहड़ बनाओ" पदयात्रा आरम्भ हुई। यह 18 दिसम्बर तक चली।

'पानी बचाओ-जोहड़ बनाओ' पदयात्रा पूरे माह चली। इस कार्यक्रम में पदयात्रियों द्वारा जनसभायें, ग्रामीण बैठक, नारे, दीवार लेखन, नुक्कड़ नाटक द्वारा ग्रामीण जनमानस, प्राकृतिक संसाधनों, जल, जंगल, जमीन के संवर्धन का आह्वान किया। यह पदयात्रा अलवर, जयपुर, दौसा, करोली, सवाईमाधोपुर के लगभग 750 गाँवों में की गई।

दिसम्बर :

5 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक एक दिवसीय आध्यात्मिक कार्यकर्ता निर्माण शिविर आयोजित किया गया। 18

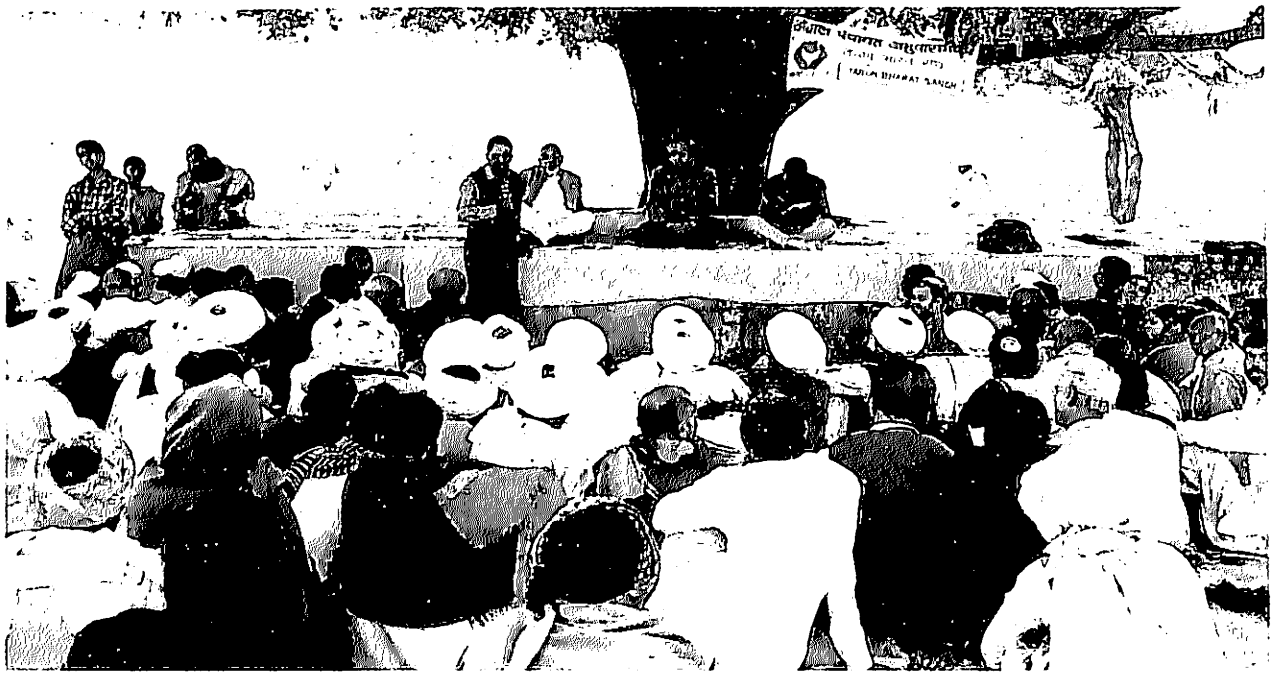

दिसम्बर को तरुण भारत संघ द्वारा 750 गाँवों में चलाई गई 'पानी बचाओ-जोहड़ बनाओ' पदयात्रा का समापन हुआ। 19 दिसम्बर से 21 दिसम्बर तक "पानी बचाओ-जोहड़ बनाओ" सम्मेलन का आयोजन किया गया। संस्था द्वारा कार्यक्षेत्र में 4 स्थानों पर जन सुनवाई की गई जिसमें अनिल अग्रवाल, टी.के.उन्नीथान, गुलाब सी.गुप्ता, मिठ्ठालाल मेहता, गुरुदास अग्रवाल, राजेन्द्र शंकर भट्ट, हरिशंकर आचार्य, सैयद रिजवी, टी.एस. चौहान, उज्ज्वल प्रधान, सुनीता नारायण आदि की उपस्थिति महत्वपूर्ण है। संस्था के कार्यक्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर जन **सुनवाई प्राकृतिक संसाधनों की मालिकी,** औद्योगिक दोहन, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में तभासं की भूमिका आदि विषयों पर ये जन सुनवाई आयोजित हुई।

19 दिसम्बर को हमीरपुर में जल पंचायत, 20 को रायसर में जंगल पंचायत, 21 को टहला में खनन पंचायत, 22 को टपूकड़ा में उद्योग पंचायत का आयोजन हुआ।

संस्था महामंत्री को 27 दिसम्बर को दी वीक पत्रिका द्वारा Man of the year पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जनवरी :

1-12 जनवरी तक संस्था के कार्यकर्ता व कार्यक्षेत्र ग्रामीणों ने अन्य प्रान्तों में चल रहे जल संरक्षण के कार्यों को देखा। अरवरी जल ग्रहण क्षेत्र में पदयात्रा, गाँव की बैठक की गई तथा 26-28 जनवरी तक हमीरपुर गाँव में जल संसद बनाई गई जिसमें अरवरी नदी के आस-पास बसे 35 गाँवों के लोगों ने भाग लिया। जल उपयोग के अपने नियम दस्तूर बनाए।

फरवरी :

16 फरवरी को पड़ाक में जल संसद की दूसरी मीटिंग की गई। हरियाणा राज्य के फोरेस्ट विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा संस्था के कार्यों का अवलोकन किया गया (25 फरवरी, 1999 को Nisarg Mitra Award-1998-99 Rotary Club of Bombay (मुम्बई) में संस्था के लिये प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण वास्ते एवार्ड से सम्मानित किया गया)

श्री राम वशेशसन देवी भाटिया मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट ने 50,000 रुपये एवार्ड से सम्मानित किया।

मार्च :

9 मार्च को अलवर के प्रबुद्धजनों द्वारा संस्था के कार्यक्षेत्र का भ्रमण किया गया।

9 से 11 मार्च तक क्षेत्र के विद्यार्थियों-शिक्षकों, प्रबुद्धजनों द्वारा तभासं कार्यों का मूल्यांकन अभ्यास कराया। इन्होंने मूल्यांकन रिपोर्ट गम्भीरतापूर्ण नाटक द्वारा प्रस्तुत की।

15 मार्च को तरुण भारत संघ को पर्यावरण के क्षेत्र में जल, जंगल, जमीन, संरक्षण के कार्य का पुरस्कार मिला।

15 मार्च से 29 मार्च तक के लिये जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, उत्तरी सांस्कृतिक कला क्षेत्र इलाहाबाद तथा तरुण भारत संघ के संयुक्त तत्वावधान में तरुण आश्रम में 15 दिवसीय मूर्ति कला कुशलता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

27 से 29 मार्च तक कर्पाट के महानिदेशक रंगन दत्ता ने तरुण भारत संघ के कार्यों को देखा तथा तभासं के कार्यों की सराहना की।

31 मार्च नमक सत्याग्रह आन्दोलन के संचालक सर्व सेवा संघ अध्यक्ष श्री ठाकुर दास बंग जी ने ग्राम भांवता में एक जन सभा को सम्बोधित किया ।

31 मार्च को आठ देशों से आये प्रतिनिधियों को भांवता के जल संरक्षण कार्यों को दिखाया ।

प्रचार-प्रसार :

1998-99 (अप्रैल से मार्च) तक पूरे वर्ष पर्यावरण के विभिन्न मुद्दों के साथ-साथ आज के समय में भी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में समाज की प्राचीन परम्परा का पूरे देश में समाचार पत्र-पत्रिकाओं व दूरदर्शन द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया । मुख्य रूप से जल संरक्षण की प्राचीन पद्धति का प्रचार-प्रसार हुआ है । संस्था ने प्राचीन परम्पराओं द्वारा किये गये जल संरक्षण कार्यों का साहित्य प्रसारित किया है जिसमें समाज को आने वाले भावी समय में जल संकट से बचने के लिये सचेत होने की जरूरत पर बल दिया गया ।

पुस्तक प्रकाशन :

साझाश्रम पुस्तक का प्रकाशन हुआ । वर्ष 1998 का कलैण्डर प्रकाशन जिसका नाम है -

'बिन पानी सब सून'

मीडिया सहयोग :

मीडिया मैन सर्विस फिल्म निर्माता ने तरुण भारत संघ के काम पर तीन फिल्में बनाईं । इस श्रृंखला का नाम है -

तरुण प्रयास :

1. पानी बोलेगा
2. बड़े बांधों का विकल्प
3. खनन से टकराते गाँव
4. जलनीति

जी. टी. वी. :

'एक और नजरिया' नामक आधा घन्टे की डॉक्यूमेन्टरी बनाई ।

स्टार प्लस :

भारत में जल संकट का समाधान ।

दूरदर्शन तथा अन्य कई चैनलों ने भी फिल्म निर्माण करके दिखाया ।

वर्ष 1998 में बाहर से आने वाले कुछ मेहमानों तथा भ्रमणकर्ताओं की सूची

क्र.स.	दिनांक	व्यक्ति/पता	संख्या	उद्देश्य
1	26.1.98	महाराष्ट्र, नागालैण्ड से अर्चना, सपना, अर्पणा	3	धराड़ी परम्परा को देखने-समझने
2	30.1.98	डॉ. भरत झुनझुनवाला	1	राजस्थान की वैकल्पिक जलनीति के दस्तावेज निर्माण हेतु
3	1.2.98	रजनीकान्त यादव व छोटू फोटोग्राफर	2	त.भा.सं. कार्यक्षेत्र
4	16.3.98	हरियाणा वन विभाग व वन सुरक्षा समिति सदस्य	30	जंगल संरक्षण व संवर्द्धन का कार्य देखने-समझने
5	25.3.98	दिल्ली से U.N.D.P. रंजन सामंतरे	1	तभासं के कार्यों को देखने-समझने
6	1.4.98	विष्णु जी व अमरजीत कौर के साथ स्विट्जरलैण्ड का ग्रुप आया 'इन्टर कॉपरेशन की तरफ से'	20	आई.सी.परि. का मूल्यांकन हेतु
7	17.4.98	आशीष कोठारी के साथ (सामुदायिक वन संरक्षण का) काम करने वाले लोग आये "कई देशों के"	45	जंगल संरक्षण कार्यों को देखने-समझने
8	20.4.98	साउथ एशिया के प्रोजेक्ट सदस्य	40	पाँच दिवसीय संगोष्ठी
9	20.4.98	अर्चना जी महाराष्ट्र से	1	देव वनियों के अध्ययन हेतु
10	24.4.98	डॉ.भरत झुनझुनवाला	1	वैकल्पिक जलनीति पर कार्य करने
11	15.5.98	चेतन भाई, अमेरिका	1	जलागम विकास का कार्य देखने
12	16.5.98	दिल्ली से सत्यमाला व विजयश्री जी आयी 'इन्दिरा गाँधी विश्वविद्यालय'	2	ग्रामीण विज्ञान का पाठ्यक्रम विकसित करने हेतु
13	27.5.98	उदयपुर से जन जागरण समिति के लोग आये	30	कार्य देखने
14	28.5.98	रतलाम से	2	कार्य देखने

क्र.स.	दिनांक	व्यक्ति/पता	संख्या	उद्देश्य
15	16.6.98	दिल्ली से फराद व स्वाति जी	2	जंगल संरक्षण के कार्यों का अध्ययन
16	9.7.98	इक्को प्रोजेक्ट के मूल्यांकन हेतु आये त्रिभुवन दुबे व जैन साहब (FAIR से)	2	मूल्यांकन कार्य हेतु
17	17.7.98	सीडा प्रोजेक्ट से श्री रमेश जी व उनके साथी	2	मूल्यांकन हेतु
18	18.7.98	बम्बई से श्रीधर	1	जंगल संरक्षण कार्यों का अध्ययन
19	27.7.98	U.N.D.P. से श्रीमती कल्याणी देवी आदि	1	प्रोजेक्ट निर्माण के लिये प्राथमिक अध्ययन हेतु
20	अगस्त	सिकोडीकोन, चाकसू, जयपुर	50	जल संरक्षण कार्य देखने
21	9.9.98	कर्पाट नई दिल्ली से सुश्री अन्सू बन्सल	1	त.भा.सं. के कार्य देखने-समझने
22	9.9.98	पावड़ी मूल्यांकन टीम	5	मूल्यांकन हेतु
23	2.10.98	श्री मिठ्ठालाल जी मेहता साथ में और लोग आये	30	जलागम विकास कार्य देखने-समझने
24	28.10.98	फराद, श्रीधर व स्वाति	3	जंगल संरक्षण का अध्ययन
25	31.10.98	अनिल अग्रवाल व उनके साथ कई लोग, सम्मेलन सम्बोधन हेतु	10	जल संरक्षण का कार्य करने वालों को सम्मानित करने
26	27.11.98	चित्तौड़ शुगर मिल वाले आये	13	जलागम विकास कार्य देखने
27	29.11.98	डॉ. अठांवले साहब हैदराबाद से व अशोक जी पुणे से	2	भू जल अध्ययन हेतु
28	9.12.98	जापान के लोग आये, U.N.D.P. से सम्बन्धित महिला आई	7	शिक्षा के कार्य को देखने-समझने
29	9.12.98	बायफ, फैजाबाद से संजय जी व साथी	8	जलागम विकास कार्य को देखने-समझने
30	17.12.98	अरुण तिवारी फिल्म हेतु आये	5	फिल्म निर्माण
31	दिसम्बर में	योगासन हेतु मद्रास से 1 पुरुष/1 महिला	2	योगासन शिविर
32	18-21.12.98	जन सुनवाई, जल पंचायत, जंगल पंचायत, खनन पंचायत, उद्योग पंचायत	28000	जल, जंगल, जमीन पर जन सुनवाई सम्मेलन
33	दिसम्बर 98	कर्नाटक सरकार के वन विभाग के वन संरक्षक व उपसंरक्षक आये	3	साझा वन प्रबन्ध के कार्यों को देखने
34	"	उड़ीसा ओक्सफेम के दो परियोजना अधिकारी	2	गाँव में हुए कार्यों को देखने
35	"	पर्यावरण केन्द्र के निदेशक, अनिल अग्रवाल, उपनिदेशक सुनीता नारायण, पूर्व मुख्य न्यायाधीश	4	जलनीति सम्मेलन

क्र.स.	दिनांक	व्यक्ति/पता	संख्या	उद्देश्य
		श्री गुलाब सी. गुप्ता, पूर्व कुलपति टी.के.उन्नीथान, सईद रिजवी, उज्ज्वल प्रधान, मिठ्ठालाल मेहता, एस.आर.हीरेमठ		
36	22.12.98	रिचर्ड व अमित (डाउन टू अर्थ) से आये	2	तभासं कार्यों पर रिपोर्ट तैयार करने
37	28.12.98	अमरजीत कौर, विष्णु जी मार्टिन बीजर परिवार सहित काम देखने आये 'आई.सी.'	5	कार्यों को देखने-समझने
38	29.12.98	बम्बई से 1 भाई/1 बहिन	2	शोध कार्य
39	17-19.1.99	W.W.F. सवाईमाधोपुर	23	शोध कार्य
40	20.1.99	बायफ संस्था, उदयपुर	2	जलागम विकास कार्य देखने
41	10.2.99	चितवन, नेपाल से	4	राष्ट्रीय उद्यान प्रबंधन
42	14.2.99	उड़ीसा, लोक दृष्टि से	40	जलागम विकास कार्य देखने
43	14.2.99	पहल, डूंगरपुर	57	जलागम विकास कार्य देखने
44	17.2.99	नयैनिका सिंह व स्वाति जी आई	2	शोध कार्य
45	23.2.99	राजस्थान के सिंचाई विभाग के मयूर शर्मा, अधिकारी, इन्जीनियर का एक दल अन्य लोग	30	जलागम विकास कार्य देखने
46	24.2.99	राजसमन्द देवगढ़ राष्ट्रीय जलग्रहण परियोजना के लोग	110	जलागम विकास कार्य देखने
47	9.3.99	पर्यावरण शिक्षा व संस्कृति संगोष्ठी हुई	50	शिक्षा कार्य अध्ययन
48	17.3.99	रोविन डेविड-मुकुल पवार, मूर्ति कला प्रशिक्षक जवाहर कला केन्द्र जयपुर से कार्यक्रम निर्देशिका व उनके साथी, इलाहाबाद केन्द्र से मिश्रा जी	5	मूर्ति कला शिविर
49	24.3.99	जोधपुर से इन्द्र सिंह सोलंकी के साथ माणकलाव क्षेत्र से लोग आये	26	जलागम कार्य देखने
50	27.3.99	कर्पाट के डी जी, श्री दत्ता साहब आये व अन्य लोग	6	कार्यों को देखने-समझने
51	27.3.99	कस्तूरबा ट्रस्ट, इन्दौर से	30	ग्राम स्वराज्य का काम देखने आये
52	29.3.99	म.प्र. सरकार के वन विभाग के लोग व वन समितियों के लोग	50	जंगल, जमीन कार्यों को देखने-समझने
53	31.3.99	9 देशों के लोग आये (F.A.O. कार्यशाला के तहत)	40	जंगल, जमीन कार्यों को देखने-समझने
54	31.3.99	ठाकुरदास बंग व अन्य लोग	23	डांडी नमक यात्रा का पड़ाव

तरुण भारत संघ

शैक्षणिक भ्रमण क्षेत्र व भ्रमण पथ

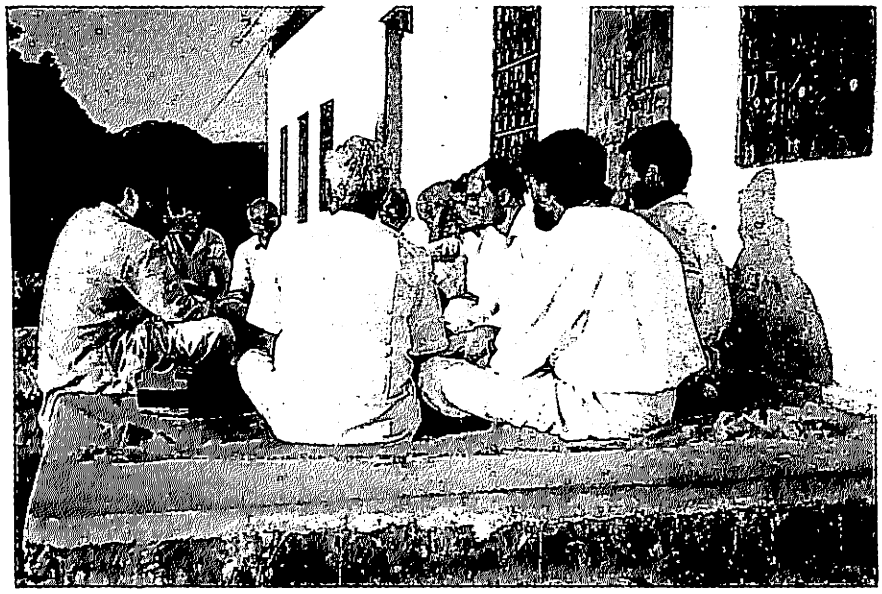

क्रं. स.	जलागम क्षेत्र का नाम	मुख्य कार्य (गाँव)	विशेषता	दिवस	एक तरफ की दूरी (कि.मी.)
1	पावड़ी क्षेत्र	तरुण आश्रम, गोपालपुरा, किशोरी, कालालाका, बाछड़ी, श्यामपुरा, सूरतगढ़	त.भा.सं. के कार्यों की शुरुआत, सिंचाई विभाग से नोटिस, सरकार के साथ काम का अनुभव	1 दिन	22
2	सरसा नदी जलागम क्षेत्र	बुर्जा, लिल्या, स्यालूता, बल्देवगढ़	सरसा सरस गयी, नारायणी जी	1 दिन	35-40
3	देवरी क्षेत्र (जहाजवाली नदी)	रूपवास, लोशल राड़ा, जहाज, देवरी	सरिस्का संघर्ष	2 दिन	60 गाड़ी से + 10 पैदल
4	ठेकडीन क्षेत्र	कुंडरोली, ठेकडीन	बंजर निजी जमीनों का सुधार	1 दिन	70
5	गढ़-राजौर क्षेत्र (भगाणी)	गढ़, मांडलवास, राजौर, कांसला, कान्यास, पीला पानी, कालाखेत	खाद्यान्न में स्वावलम्बन नीलकंठ, कांकवाडी किला	1 दिन /2 दिन	40 गाड़ी से + 12 पैदल
6	जांगरू क्षेत्र	जांगरू, नाहरखोरा, भोज्यापाड़ा	आठ गाँवों का एक संगठन	1 दिन	115

क्रं. स.	जलागम क्षेत्र का नाम	मुख्य कार्य (गाँव)	विशेषता	दिवस	एक तरफ की दूरी (कि.मी.)
7	दुहारमाला	दुहारमाला, घाटीवाला, रहकामाला, नागलहेडी	पेयजल समस्या समाधान	1 दिन /2 दिन	25 गाड़ी से + 10 पैदल
8	दारोलाई क्षेत्र	पिपलाई, हमीरपुर, लालपुरा, चावाकावास, दारोलाई, रायसर	बाग वाला झरना बारहमासी बना	1 दिन	35 गाड़ी से + 10 पैदल
9	कोचर (सवाईमाधोपुर)	गढ़मोरा, नयाडेरा, भैसला, सातोदाई	पेयजल हेतु टांका निर्माण	1 दिन /2 दिन	90 गाड़ी से + 25 पैदल
10	अरवरी क्षेत्र	भांवता, हमीरपुर, कालैड़	अरवरी का पुनर्जन्म	1 दिन	40 गाड़ी से + 25 पैदल
11	गढ़बस्सी	जयसिंहपुरा, गुढ़ाकिशोरदास, गढ़बस्सी	गढ़बस्सी में देवबनीयां विकास	1 दिन	25 गाड़ी से + 2 पैदल
12	बूजा	बूजा	बूजगंगा का पुनर्जन्म, विराट के ऐतिहासिक स्थान	1 दिन	40 गाड़ी से
13	निम्मी	निम्मी, घाटावारा	रेतीले क्षेत्र में कार्य	1 दिन	80 गाड़ी से + 3 पैदल
14	नारायणी माता-तिलदेह	लांकाश, खोह-दरीबा, छीन्ड-रामपुरा, तिलवाड़ी	खनन क्षेत्र में काम	1 दिन	30-35 गाड़ी से
15	कुंडला-घाट	कुंडला, खेड़ली, वीरपुर	जलागम विकास कार्य	1 दिन	60 गाड़ी से + 4 पैदल
16	श्यामगंगा	श्यामगंगा, पथरोड़ा, खरखड़ा	जलागम विकास कार्य	1 दिन	75 गाड़ी से
17	टोडली क्षेत्र	टोडली, जुगरावर	जलागम विकास कार्य	1 दिन	110 गाड़ी से
18	किशनगढ़ क्षेत्र	मोटूका, नान्या, थोस, बाझोटा, जैस्तिका	जलागम विकास कार्य	1 दिन	125 गाड़ी से
19	जाट मालियर क्षेत्र	हसनपुर, विलासपुरा, मालियर	जलागम विकास कार्य	1 दिन	125 गाड़ी से
20	सादीपुर (तिजारा)	बाधोर, सादीपुर, आदिपुर	जलागम विकास कार्य	1 दिन	140 गाड़ी से
21	मन्दारी की ढाणी क्षेत्र	हाजीपुर, मन्दारी की ढाणी	जलागम विकास कार्य	1 दिन	80 गाड़ी से
22	भगतपुरा क्षेत्र	भगतपुरा, कालीखोल, बेरा	जलागम विकास कार्य	1 दिन	50 गाड़ी से
23	रावजी काखवा क्षेत्र	सर, धौण, खवारावजी, सन्देरकी	जलागम विकास कार्य	1 दिन	80 गाड़ी से
24	गढ़मोरा क्षेत्र	चिरावड़ा, बरावंडा, रिवाली, अमावरा	जलागम विकास कार्य	1 दिन	110 गाड़ी से

ICCO

की सहायता से तरुण भारत संघ द्वारा

आयोजित शिविर

क्र.स.	गाँव का नाम	तहसील-जिला	सम्भागियों की संख्या	दिनांक	टिप्पणी
1	रिवाली	बामनवास-स.मा.	6	23-24.6.98	दाई प्रशिक्षण शिविर
2	रिवाली	बामनवास-स.मा.	50	21-28.7.98	अन्न सुरक्षा प्रशिक्षण-10 दिन
3	कुआँ गाँव	बामनवास-स.मा.	50	1-6.8.98	अन्न सुरक्षा-5 दिवसीय
4	अमावरा	बामनवास-स.मा.	60	23.8.98	किसान प्रशिक्षण शिविर
5	गढ़मोरा	नादौती-करोली	50	29.7-3.8.98	अन्न सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर
6	नूरपूर बासड़ा	बसवा-दौसा	38	26.8.98	किसान चेतना शिविर
7	पाडाकरण	बामनवास-स.मा.	50	5-14.9.98	कृषक प्रशिक्षण-10 दिवसीय अन्न सुरक्षा शिविर
8	निमाज	नादौती-करोली	50	25.8-3.9.98	अन्न सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर

क्र.स.	गाँव का नाम	तहसील-जिला	सम्भागियों की संख्या	दिनांक	टिप्पणी
9	करनावर	बसवा-दौसा	21	29.9.98	पर्यावरण चेतना शिविर
10	वीरपुर	राजगढ़-अलवर	70	23.10.98	पर्यावरण चेतना शिविर
11	तालाब	राजगढ़-अलवर	80	25.10.98	जन चेतना शिविर
12	भीकमपुरा	थानागाजी-अलवर	150	31.10.98	कार्यकर्ता सम्मान सम्मेलन
13	गढ़मोरा	नादौती-करोली	168	1.12.98	जल, जंगल, जमीन चेतना शिविर
14	हमीरपुर	थानागाजी-अलवर	250	19.12.98	अरवरी नदी के जल व जीवों पर हक निर्धारण 'जन सुनवाई' सम्मेलन
15	रायसर नदी का मन्दिर	जमुवारामगढ़-जयपुर	165	20.12.98	जमुवारामगढ़ अभ्यारण्य में खनन तथा विस्थापन पर 'जन सुनवाई' सम्मेलन
16	टहला	राजगढ़-अलवर	125	21.12.98	सरिस्का की भूमि पर खनन एवं छोटी अदालतों द्वारा बड़ी अदालतों के खिलाफ दिये गये निर्णय। विस्थापन तथा खनन 'जन सुनवाई' सम्मेलन
17	रावजी काखवा	सिकराय-दौसा	90	20.1.99	चेतना शिविर
18	ईतवाना	राजगढ़-अलवर	102	20.1.99	जनजाग्रति शिविर
19	लिल्या	राजगढ़-अलवर	80	25.1.99	पर्यावरण चेतना शिविर
20	सांवत्सर	थानागाजी-अलवर	50	26.1.99	अन्न सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर
21	हमीरपुर	थानागाजी-अलवर	250	26-29.1.99	अरवरी संसद निर्माण सम्मेलन
22	वीरपुर-मण्डावरी	राजगढ़-अलवर	58	10.2.99	गोचर विकास शिविर
23	लांकी	राजगढ़-अलवर	95	11.2.99	महिला चेतना शिविर
24	देवती बाँध	राजगढ़-अलवर	90	12.2.99	गोचर विकास शिविर
25	नई कोठी	विराटनगर, जयपुर	79	21.2.99	पर्यावरण चेतना शिविर
26	खेड़ली	राजगढ़-अलवर	84	24.2.99	महिला 'चार गाँवों की' चेतना शिविर
27	जादू का वास	विराटनगर, जयपुर	49	24.2.99	पर्यावरण चेतना शिविर
28	खेड़ली	राजगढ़-अलवर	80	25.2.99	जल, जंगल, जमीन, चेतना शिविर
29	देवती बाँध	राजगढ़-अलवर	70	26.2.99	गोचर विकास शिविर
30	सकट, मंडावरी	राजगढ़-अलवर	57	27.2.99	महिला प्रशिक्षण शिविर

ICCO

की सहायता से चला

स्वास्थ्य कार्यक्रम विवरण

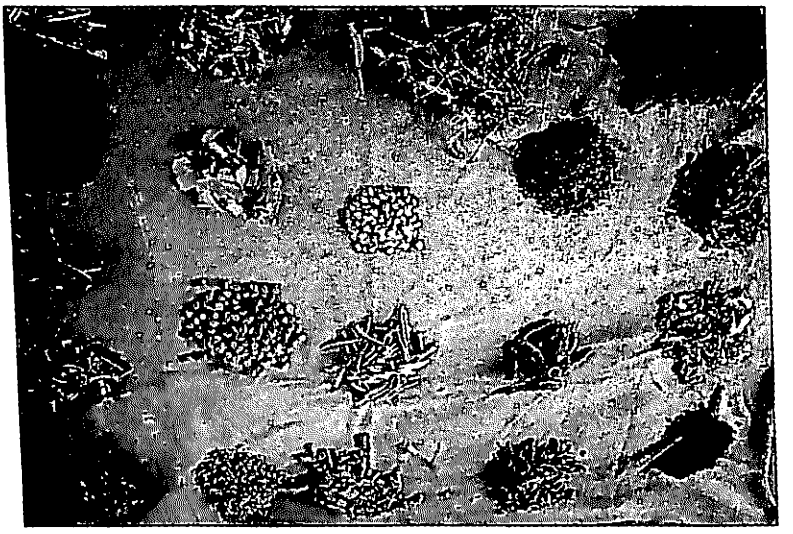

क्र.स.	कार्यक्रम	संख्या	माह	ग्राम/स्थान	सम्भागी सं.	विशेष विवरण
1.	ग्राम्य जड़ी-बूटी चेतना शिविर	19	25,29.8.98 10.9.98/ 21.11.98/ 2.12.98/20.1.99	अजबगढ़-उपकेन्द्र, रिवाली, किशनगढ़ तिजारा खवारावजी, रायसर	187	पानी चेतना यात्रा के दौरान ही लोगों को जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज, पद्धति के फायदे भी बताये गये।
2.	वनौषधि पहिचान पदयात्रा	10	जु.,अग.,दिस., अक्टू., 98 फर., मई	अजबगढ़ केन्द्र, रिवाली क्षेत्र, किशनगढ़, गढ़मोरा क्षेत्र, तिजारा	275	पद यात्राओं के दौरान जंगलों में जड़ी-बूटियों की पहिचान भी बताई गई।
3.	तरुण स्वास्थ्य रक्षक प्रशिक्षण शिविर	7	अप्रै., जून., जुला., सित.,नव.,दिस.	उपकेन्द्र-रिवाली एवं त.भा.सं. भीकमपुरा	68	स्वास्थ्य रक्षकों को रोग का निदान एवं लक्षण और उसमें उपयोगी औषधि का ज्ञान कराया गया। जड़ी-बूटियों की पहिचान करना तथा दवा बनाना भी सिखाया गया।

क्र.स.	कार्यक्रम	संख्या	माह	ग्राम/स्थान	सम्भागी सं.	विशेष विवरण
4.	महिला एवं शिशु स्वास्थ्य शिविर	35	दिसम्बर	उपकेन्द्र-रिवाली गढ़मोरा, तिजारा, अजबगढ़,खवारावजी	500	महिला समूह विद्यालय, शिशु पालनागृह एवं सामान्य शिविरों में स्वास्थ्य हेतु दिनचर्या खानपान आदि का ज्ञान कराया गया एवं दवा वितरित की गई।
5.	दाई प्रशिक्षण शिविर	2	2 से 7 जून तक 22 से 27 दिस.	त.भा.सं. चिकित्सालय भीकमपुरा एवं उपकेन्द्र-रिवाली	22	सुरक्षित प्रसव का ज्ञान कराया एवं सामान्य सावधानी एवं प्रसव के समय होने वाले रोगों के बचाव के उपाय बताये गये।
6.	औषध निर्माण फार्मेसी कार्य	30 प्रकार की औषधि बनाई गई	4 नव., 17 सित., 25 दिस., 25 अप्रै.	त.भा.सं. चिकित्सालय भीकमपुरा	160 किलो च्यवनप्राश बनाया गया तथा अन्य सभी चूर्ण, तरुण धारा बटी आवश्यक सभी औषधियों का निर्माण किया।	
7.	वन औषधि उद्यान विकास	4	15 जून से 1 अग. तक भीकमपुरा चिकित्सालय परिसर अजबगढ़, भाँवरा "रिवाली", तिजारा-उपकेन्द्र		लगभग 117 नवीन औषधियां वृक्ष, गुलम क्षुप एवं लता आदि के पौधे लगाये गये।	
8.	चिकित्सा शिविर	5	26-27 अप्रै., 9-10 जून, 7 जुला., 20 नव., 20 फरवरी	उपकेन्द्र गढ़मोरा, अजबगढ़ क्षेत्र एवं रिवाली क्षेत्र	687	तीनों उपकेन्द्रों पर शिविर लगाकर रोगियों को औषधि दी गई।
9.	तरुण स्वास्थ्य रक्षकों एवं चिकित्सा में देखे गये रोगी	63	1,78,387 सम्पूर्ण वर्ष	पूरे कार्य क्षेत्र में	1,78, 387	यह आंकड़ा औसत से आया है।
10.	पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान	3	20 से 22 नव., 4 से 6 दिस., 13 से 17 जन.,	पूरे कार्य क्षेत्र में	200	500 पम्पलेट छपवाकर आम जनता में बांटे गये, दीवार लेखन किया गया एवं गाँव-गाँव से नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर बच्चों को अपने साधनों से लाया गया।
11.	देशी जड़ी-बूटी चिकित्सा प्रचार-प्रसार	संस्था द्वारा आयोजित शिविरों में देशी इलाज पद्धति के फायदे एवं अंग्रेजी के दुष्परिणाम की बातें रखीं तथा स्टार टी.वी. एवं फिल्में आदि से स्वास्थ्य चेतना फैलाई, लेख लिखें।				

ICCO

की सहायता से तरुण भारत संघ

के कार्यकर्ताओं द्वारा शैक्षणिक भ्रमण

क्र.स.	गाँव	तहसील-जिला	संभागी सं.	दिनांक	क्षेत्र, टिप्पणी
1	लोसल	राजगढ़, अलवर	16	17-22.12.98	सरसा-अरवरी
2	रिवाली-गढ़मोरा	नादौती	44	14.3.99	महिला/पुरुष
3	रिवाली क्षेत्र	बामनवास-स.मा.	21	17-22.12.98	अरवरी-सरसा
4	खवाराव जी	सिकराय-दौसा	11	17-22.12.98	अरवरी-सरसा
5	गढ़मोरा क्षेत्र	नदौती-करोली	8	17-22.12.98	दुहारमाला-तोलावास
6	गढ़मोरा	नदौती-करोली	21	14-16.10.98	भांवता-अरवरी नदी-जहाजवाली नदी
7	बूजा,छतोली, नीमली	विराटनगर-जयपुर	25	20.10.98	सूरतगढ़, गोपालपुरा, सरसा-अरवरी
8	पड़ाक थानागाजी	थानागाजी-अलवर	150	16.2.99	अरवरी संसद में भागीदारी व देखना

SIDA की सहायता से
तरुण भारत संघ द्वारा आयोजित शिविर

क्र.स.	गाँव का नाम	तहसील-जिला	सम्भागियों की संख्या	दिनांक	टिप्पणी
1	जाट मालियर	तिजारा-अलवर	24	31.8.98	किसान प्रशिक्षण शिविर
2	सादीपुर	तिजारा-अलवर	28	30.10.98	जल, जंगल, जमीन चेतना शिविर
3	गुर्जर मालियर	तिजारा-अलवर	43	9.1.99	जल, जंगल, जमीन चेतना शिविर
4	जाट मालियर	तिजारा-अलवर	50	5.1.99	अन्न सुरक्षा प्रशिक्षण+हसनपुर
5	जैस्तिका 'मोटका'	किशनगढ़-अलवर	116	24.2.99	किसान प्रशिक्षण शिविर
6	हसनपुर	तिजारा	50	5.1.99	अन्न सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर
7	टपूकड़ा	तिजारा-अलवर	650	22.12.98	औद्योगिक क्षेत्र तिजारा में जमीन अधिग्रहण तथा प्रदूषण

SIDA की सहायता से
तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा शैक्षणिक भ्रमण

क्र.स.	गाँव	तहसील-जिला	संभागी सं.	दिनांक	क्षेत्र, टिप्पणी
1	सादीपुर	तिजारा-अलवर	11	29.10.98	भांवता-अरवरी नदी-जहाजवाली नदी
2	"हसनपुर	तिजारा-अलवर	25	31.10.98	भांवता-अरवरी नदी-जहाजवाली नदी
3	जाट मालियर	तिजारा-अलवर	11	7.11.98	अरवरी-सरसा-जहाज
4	जाट मालियर	तिजारा-अलवर	13	18.12.98	जहाज-अरवरी
5	तिजारा	तिजारा-अलवर	295	नवम्बर 98	राज्यस्तरीय शिविर

IC की सहायता से

पशुधन विकास कार्यक्रम

क्र.स.	गतिविधियां	कार्य विवरण
1	जन सम्पर्क बैठकें	चयनित 9 गाँवों में जन सम्पर्क व नुक्कड़ सभाएं करके लोगों के साथ परियोजना के कार्यों का खुलासा किया गया। परियोजना मदों की पूर्ण जानकारी 9 गाँवों के सामने रखी।
2	गोपालकों का चयन	अरवरी बेसिन के 5 गाँव समरा, हमीरपुर, कालैड़, जैतपुर, गुजरान, नटाटा में आम सभा द्वारा चयनित गोपालकों को प्रशिक्षण हेतु तैयार किया गया।
3	गोपालकों को प्रशिक्षण	अरवरी बेसिन के 5 गाँवों के 5 जोड़े (स्त्री-पुरुष) को तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा दिनांक 8/12/98 से 8/3/99 तक 3 महीने का प्रशिक्षण तरुण भारत संघ, भीकमपुरा में दिया गया।
4	ग्राम विकास समिति V.D.C.	पशुधन विकास परियोजना के संचालन हेतु समरा, हमीरपुर, कालैड, नटाटा, आदि गाँवों में V.D.C. बनायी गई। यह V.D.C. प्रत्येक महीने में निश्चित तिथि पर बैठकर पिछले कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्यों की कार्ययोजना बनाने का प्रयास कर रहे हैं।
5	सहभागिता आधारित कार्य P.R.A.	पशुपालकों के साथ बैठकर सहभागिता आधारित कार्ययोजना बनाई गई एवं उनकी भविष्य में की जाने वाली गतिविधियों से अवगत कराया गया।
6	पशुपालकों एवं विभाग के बीच वार्तालाप	पशुपालकों का विभागीय कर्मचारियों व अधिकारियों के साथ वार्ता करने हेतु मीटिंगों का आयोजन किया गया तथा क्षेत्र में चलने वाली विभागीय गतिविधियों से अवगत कराया गया।
7	पशुओं का सर्वेक्षण कार्य	अध्ययन एवं दस्तावेजीकरण हेतु पशुओं का सर्वेक्षण किया गया, इसके अन्तर्गत कुल कितने पशु हैं कितना खर्च होता है तथा कितना शुभ लाभ मिलता है आदि जानकारियों हेतु अभ्यास किया गया।
8	पशुनस्ल सुधार	परियोजना क्षेत्र में पशु संवर्द्धन में विकास हेतु ग्राम सभाओं द्वारा पशुपालकों को नस्ल एवं पशु उत्पादन बढ़ाने की दिशा में विभिन्न बिन्दुओं के तकनीकी तथ्यों से अवगत कराया गया। गाँवों में प्रजनन के लिये साँड, बछड़े एवं मादाओं को चिह्नित किया गया।
9	पशु स्वास्थ्य एवं रखरखाव सम्बन्धी प्रवेश बिन्दु गतिविधियां	प्रवेश बिन्दु के अन्तर्गत चयनित गाँवों में कृमिनाशक दवा पिलाई गई, संक्रामक रोगों की रोकथाम हेतु टीकाकरण किया गया, साथ ही सामान्य बीमारियों का भी इलाज किया गया, इसकी रिपोर्ट संलग्न है।

शैक्षणिक भ्रमण

क्र.स.	गतिविधियां	दिनांक	गाँव का नाम
1	जन सम्पर्क बैठकें	27 बैठकें विभिन्न तिथियों में	चयनित 9 गाँवों में की गई
2	चेतनात्मक शिविर	17.10.98	हरीपुरा
	चेतनात्मक शिविर	26.10.98	कालैड़
	चेतनात्मक शिविर	27.10.98	जैतपुर गुजरान
	चेतनात्मक शिविर	19.12.98	हमीरपुर
	चेतनात्मक शिविर	31.12.98	हमीरपुर
3	शैक्षणिक भ्रमण 'स्टाफ'	8.1.99	पावड़ी क्षेत्र इकाई Ist गुढ़ा किशोरदास व मैजोड़
	शैक्षणिक भ्रमण 'स्टाफ'	22-23.1.99	पावड़ी क्षेत्र इकाई IInd सीलीबावड़ी
	शैक्षणिक भ्रमण 'स्टाफ'	13-14.2.99	पावड़ी क्षेत्र इकाई IIIrd गुवाड़ा गुगली, हार
4	शैक्षणिक भ्रमण पशुपालकों का	18.12.98	समरा हमीरपुर से भांवता
	शैक्षणिक भ्रमण पशुपालक्रों का	26.1.99	हमीरपुर से भांवता
	शैक्षणिक भ्रमण पशुपालकों का	8.2.99	समरा से गुढ़ा किशोरदास, मैजोड़
	शैक्षणिक भ्रमण पशुपालकों का	28.2.99	गढ़ से गुढ़ा किशोरदास, मैजोड़
	शैक्षणिक भ्रमण पशुपालकों का	6.3.99	मांडलवास से मैजोड़, गुढ़ा किशोरदास
5	संगठन निर्माण "समूह" वास्ते बैठकें	1.12.98	गढ़
	संगठन निर्माण "समूह" वास्ते बैठकें	16.1.99	समरा
	संगठन निर्माण "समूह" वास्ते बैठकें	27.1.99	हमीरपुर
	संगठन निर्माण "समूह" वास्ते बैठकें	3.2.99	कालैड़
	संगठन निर्माण "समूह" वास्ते बैठकें	8.2.99	जैतपुर

तरुण भारत संघ द्वारा 1 अप्रैल 98 से 31 मार्च 99 तक कराये गये जलसंरक्षण कार्यों की सूची

इक्को परियोजना

रिवाली क्षेत्र

क्र.सं	जोहड़, टांका, तलाई का नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
1.	रामसागर तालाब	थानपुरा, लालसोट, दौसा	67,885.00	16972	50,913.00
2.	गऊघाट की तलाई	गुर्जर, कोलेता, ईश्वास, स.मा.	21,260.00	5,300.00	15,960.00
3.	रामचरण का टांका	भैसला का डेरा अमावरा, बामनवास स.मा.	58,245.00	23,760.00	34,485.00
4.	घीसा का टांका	भैसला का डेरा अमावरा, बामनवास, स.मा.	89,316.00	54,832.00	34,484.00
5.	धन्ना बाबा का टांका	पाडाकरण I, बामनवास, स.मा.	81,976.00	47,492.00	34,484.00
6.	मनकावन का टांका	पाडाकरण II, बामनवास, स.मा.	1,02,085.00	67,600.00	34,484.00
7.	भैरों जी का टांका	भाटाला, गढ़मोरा, नादौती, करोली	54,289.50	22,600.00	31,689.00
8.	बाला जी का टांका	भाटाला, गढ़मोरा, नादौती, करोली	35,952.00	14,400.00	21,552.00
9.	टांका	नयाडेरा, नादौती, करोली	1,32,180.00	82,500.00	49,680.00
10.	टांका	गली, डावडी, गढ़मोरा, नादौती, करोली	52,995.00	28,792.00	24,203.00
11.	भकाला का डाबरा	थानपुरा, लालसोट, दौसा	8,600.00	2,866.00	5,734.00
12.	जड़वाली तलाई	थानपुरा, लालसोट, दौसा	5,600.00	1,866.00	3,734.00
13.	रेबली की तलाई	पाठी, लालसोट	4,500.00	1,500.00	3,000.00
14.	बेदरी	काचरहेड़ा, बामनवास स. माधोपुर	21,930.00	5,482.00	16,448.00
15.	रामरूप का एनीकट	ककराला,बामनवास,स.माधोपुर	18,180.00	10,500.00	7,680.00
16.	संतोष आश्रम की तलाई	पतासोद, गंगापुर, स.मा.	85,972.00	31,200.00	54,772.00
17.	बेहड़ा की तलाई	अमावरा, बामनवास, स.मा.	32,347.50	10,376.00	21,971.00
18.	चकवाली तलाई	चिरावड़ा, नादौती, करोली	14,728.00	3,928.00	10,800.00
19.	नटवाली तलाई	अमावरा, बामनवास	9,390.00	2,610.00	6,780.00
20.	गुर्जरों की तलाई	पाडाकरण "थला" बामनवास	12,014.00	3,791.00	8,250.00

क्र.सं.	जोहड़, टांका, तलाई का नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
21.	पेड्डा वाली तलाई	नीमाज-लालसोट, दौसा	17,430.00	4,214.00	13,216.00
22.	रामसागर तलाई	सर्र, लालसोट, दौसा	22,539.00	7,299.00	15,240.00
23.	ठंडी का कच्चा टांका	गुर्जर, कोलेता, बामनवास स.मा.	12,000.00	6,000.00	6,000.00
24.	तेलियान तलाई	रेवास, नादौती, करोली	12,000.00	4,000.00	8,000.00
25.	रामतलाई की तलाई	संदेरकी, गढ़गुमानपुरा, लालसोट, दौसा	44,395.00	14,798.00	29,597.00
26.	गुर्जरों वाली तलाई	संदेरकी, सिकराय, दौसा	17,335.00	5,500.00	11,835.00
27.	आमली वाली तलाई	थूमड़ी, लालसोट, दौसा	7,800.00	2,600.00	5,200.00
28.	कुण्ड चरागाह	भांवरा, बामनवास स.मा.	82,624.00	51,382.00	31,242.00
29.	पीला डाबरा	कुआँ गांव, बामनवास स.मा.	17,060.00	5,590.00	11,470.00
30.	गदोड की तलाई	जाग दरवाजा, बामनवास स.मा.	9,650.00	3,150.00	6,500.00
31.	गोखरिया का बन्धा	पाडाकरण, बामनवास स.मा.	18,247.00	8,095.00	10,152.00
32.	रामतालाब	नन्दा का डेरा, नादौती, करोली	26,414.00	8,617.00	17,797.00
33.	घीसा वाली दस परिवार	नांग तलाई, बामनवास स.मा.	44,993.00	18,225.00	26,768.00
34.	समय सिंह का बन्धा	चिरावड़ा, नादौती, करोली	25,224.00	12,612.00	12,612.00
35.	तलाई	सातोलाई, बामनवास स.मा.	14,382.00	3,272.00	11,110.00
36.	सूकली का एनीकट	खवारावजी, दौसा	1,01,636.00	51,510.00	50,126.00
37.	डांडी वाला एनीकट	खवारावजी, दौसा	63,518.00	31,759.99	31,759.00
38.	संस्या वाला एनीकट	खवारावजी, दौसा	51,602.00	25,801.00	25,801.00
39.	कोली कुण्ड	गढ़मोरा	27,950.00	18,870.00	9,080.00
	योग				**8,04,608.00**
राजगढ़ क्षेत्र					
40.	मासूणी नदी का एनीकट	श्यालूता राजगढ़	11,120,00	2,100.00	9,020.00
41.	फूटाला बांध का एनीकट	लाकास राजगढ़	29,160,00	9,90.00	28,170.00
42.	नाथोवाला जोहड़	नागल करणा राजगढ़	32,184.90	8,046.90	24,138.00
43.	गोपाल का बाँध	लोसल तालाब राजगढ़	4,800.00	शरीर श्रम	4,800.00
44.	खाती पोला जोहड़	खात्याना राजगढ़	17,917.75	4,479.75	13,438.00

क्र.सं.	जोहड़, टांका, तलाई का नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
45.	हीरामल बाबा का जोहड़	लील्या विघोत राजगढ़	1,61,409.50	53,685.50	1,07,724.00
46.	गौरा वाला जोहड़	लील्या	15,762.50	5,254.00	10,508.50
47.	स्कूल वाला जोहड़ मूरे खुर्द	भूरे खुर्द "	8,239.00	2,060.00	6,179.00
48.	जगन लाल मीणा के खेत की मेड़बन्दी	गढ़ "	1,848.00	9,24.00	9,24.00
49.	ईशवाना का एनीकट	ईशवाना	6,500.00	शरीर श्रम	6,500.00
50.	जगदीश का एनीकट की साइड वाल	नागल चन्देल	11,553.77	5,776.77	5,777.00
51.	घोड़ाघाट का एनीकट	श्यालूता	14,560.00	5,080.00	9,480.00
52.	राजपूतों की हवेली के पास वाला एनीकट	ईशवाना	63,145.00	20,673.00	42,472.00
53.	गऊकुण्ड जोहड़	बिचपुरी रैणी	17,161.00	6,503.00	10,658.00
54.	भर्तृहरि बाबा के नीचे का भैंरुदेव जोहड़	बीरपुर बीघोता	1,853.28	618.28	1,235.00
55.	भौंराज का एनीकट	"	58,114.00	20,105.00	38059.00
57.	सार्वजनिक एनीकट	कीटला	11,800.00	शरीर श्रम	11,800.00
58.	पचवीर वाला जोहड़	बीरपुर	2,954.00	985.00	1,969.00
					3,32,851.50
थानागाजी					
59.	एनीकट हेरावाला काकड़ की ढाणी	आगर	6,387.50	शरीर श्रम	6,387.50
60.	कुंजसागर	कालैड़, थानागाजी	12,095.00	2,660.00	9,435.00
61.	बलोड किशना जी का एनीकट	थानागाजी	1,605.00	शरीर श्रम	1,605.00
62.	जब्बर सागर	हमीरपुर "	8,835.00	शरीर श्रम	8,835.00
63.	बन्दड़ी वाली नई जोहड़	हरदेव की ढाणी, आगर	5,222.25	1,306.25	3,916.00
64.	तरुण ताल	भीकमपुरा	18,323.25	स्वश्रम	18,323.50
65.	तरुण आश्रम खेत की मेड़बन्दी	भीकमपुरा	4,213.00	"	4,213.00
66.	तेजा बाबा का जोहड़	समरा, थानागाजी	12,314.25	3,079.25	9,235.00
67.	सार्वजनिक जोहड़ पलासाणा	प्रतापगढ़	23,104.75	5,776.75	17,328.00
68.	रूड़ाराम मीणा का जोहड़	हमीरपुर	7,855.89	5,237.89	2,618.00

क्र.सं.	जोहड़, टांका, तलाई का नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
69.	खोरावाला जोहड़	हमीरपुर	1,620.00	405.00	1,215.00
70.	बावड़ी वाली जोहड़ी	राणला की ढाणी, आगर	13,388.88	4,463.88	8,925.00
71.	काकड़ की ढाणी, आगर	थानागाजी	4,960.00	शरीर श्रम	4,960.00
72.	मनसा सागर	गढ़बस्सी	10,250.00	शरीर श्रम	10,250.00
73.	बीडां वाला एनीकट	"	22,900.00	शरीर श्रम	22,900.00
74.	सार्वजनिक खुर्रा	भांवता	2,000.00	शरीर श्रम	2,000.00
75.	पाली जोहड़	हरिपुरा	6,433.10	1,608.10	4,825.00
76.	गहरा जोहड़ तिबारा	भूरियावास	6,187.00	1,547.00	4,640.00
77.	बड़ा नाला का बाँध	केसरीसिंहपुरा,बसवा	2,32,221.60	55,807.60	1,76,414.00
78.	पीपली के मोडा का जोहड़	बनापुरा,पंडितपुरा, बसवा	7,488.00	2,496.00	4,992.00
79.	नाला पर रास्ते वाला जोहड़	बनापुरा, पंडितपुरा,बसवा	13,712.00	4,571.00	9,141.00
80.	खेत का बाँध गुढ़ा आशिक	पुरबेवाई, बसवा	2,887.50	1,925.00	962.00
81.	डबरा वाला खेत का बाँध	बास बिवाई, बसवा	2,788.00	1,858.00	930.00
					334056.00
जमवारामगढ़					
82.	गिरनारी महाराज का बाँध	बलोड जमवारामगढ़	9,104.48	2,276.48	6,828.00
83.	सति वाला बाँध नेताला	बलोड/जमवारामगढ़	15,441.75	5,147.75	10,294.00
84.	सार्वजनिक बाँध केताला	नीमला"	5,226.50	1,741.50	3,485.00
					20,607.00
उदयपुर					
85.	नाल का एनीकट	गोगुन्दा	1,91,191.00	37,631.00	1,53,560.00
86.	मेड़बन्दी कार्य	मोरवी/गोगुन्दा	82,688.00	41,344.00	41,344.00
87.	सामूहिक मेड़बन्दी	दादीया "मालू"	5,376.00	2,688.00	2,688.00
					1,97,592.00
विराटनगर					
88.	बडली का नाका एनीकट	बुर्जा 'खरबूजी'	12,677.00	4,226.00	8,451.00
89.	नीमड़ी वाला जोहड़	खरबूजी	13,556.00	4,519.00	9,037.00

क्र.सं.	जोहड़, टांका, तलाई का नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
90.	देवडूंगरी वाला बाँध	बीयावास/विराटनगर	89,478.40	53,689.40	35,789.00
91.	चरा वाला जोहड़	मामटोर खुर्द, नवलपुरा	9,058.00	3,019.50	6,039.00
92.	भोंपडी वाला जोहड़	जादू का वास, छीतोली	4,329.93	1,442.93	2,887.00
93.	काला खेत	कांखराना, विराटनगर	64,766.50	21,589.50	43,177.00
94.	सार्वजनिक जोहड़ मामटोर	मामटोर खुर्द, नवलपुरा	22,508.75	7,503.75	15,006.00
95.	सन्त बाबा का बाँध मामटोर	नवलपुरा	48,082.65	16,028.65	32,054.00
96.	सार्वजनिक बाँध	तिलोकपुरा की ढाणी	49,820.25	16,607.25	33,213.00
97.	सुर्जनपुरा का बाँध	सुर्जनपुरा, विराटनगर, छीतोली	5,339.50	3,559.50	1,780.00
98.	बन्नालाल बलाई की मेड़बन्दी	छीतोली	6,690.00	4,460.00	2,230.00
99.	खाला का जोहड़	खाव की ढाणी, छीतोली	2,251.50	750.50	1,501.00
100.	केरडा वाली जोहड़ी	जादू का वास	11,909.00	11,970.00	7,939.00
101.	का कूण्यावाला जोहड़	कुम्भावास	34,172.51	11,391.51	22,781.00
102.	शंकर वाला जोहड़	छीतोली	24,283.00	8,094.00	16,189.00
103.	बहरिगा ढेक वाला जोहड़	कुम्भावास	16,247.66	5,416.66	10,831.00
104.	नाहर नाला का जोहड़	कुम्भावास	2,275.90	758.90	1,517.00
105.	चौड़ वाला जोहड़	छीतोली	16,852.55	5,617.50	11,235.00
106.	शंकर माली की मेड़बन्दी	बियावास	2,977.34	1,985.34	992.00
107.	बामन वाला कुआँ का जोहड़	लाखावाला	13,075.00	4,358.50	8,716.50
108.	भोमियों जी का जोहड़	गोगेरा	12,306.50	4,102.00	8,204.50
109.	मस्ता बाबा का जोहड़	जादू का वास	16,800.50	5,600.50	11,200.00
110.	जाट मालियर	तिजारा	11,200.00	-	11,200.00
					301969.00

ओक्सफेम परियोजना

क्र.सं.	बांध/जोहड़ आदि कार्यों के नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
111.	सार्वजनिक जोहड़, बहलोड भोमा की ढाणी	जमवारामगढ	12,881.33	4,294.33	8,587.00
112.	चतरपुरा का एनीकट, थलि	"	2,850.00	-	2,850.00
113.	रामबलाई का एनीकट, दारोलाई	"	9,000.00	3,000.00	6,000.00
114.	ताल उपली जोहड़ बस्सी डगोता	"	4,435.00	1,479.00	2,956.00
	योग				**20393.00**

सीडा परियोजना की सूची

मालाखेड़ा क्षेत्र					**60619.00**
115.	खुर्रा सार्वजनिक	पथरोड़ा/मालाखेड़ा	11,685.00	3,685.00	8,000.00
116.	पुन्यसर जोहड़	पुनखर/मालाखेड़ा	38,110.30	12,704.30	25,406.00
117.	नवीरंवा के खेत की मेड़बन्दी	पथरोड़ा/मालाखेड़ा	3,918.00	1,959.00	1,959.00
118.	मरघट वाला जोहड़	खरखड़ा/कैरवावाल	14,543.30	3,634.30	10,900.00
119.	भज्याखाँ वाला जोहड़	खरखड़ा/कैरवावाल	19,139.00	4,785.00	14,354.00
लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र					**2,22,180.00**
120.	छुगल की जोहड़ी	बाँई खुटेटा "घाट"	2,268.40	756.40	1,512.00
121.	गिर्राज का जोहड़	जांगरू 'खोह'	26,620.65	8,875.65	17,745.00
122.	कोठी वाला जोहड़	परोहित गोठडी बेरला	34,991.75	8,748.75	26,243.00
123.	भंगी वाली पूठ का जोहड़	द्वारकपुर बडेर	31,939.00	7,985.00	23,954.00
124.	जाट रायपुर का जोहड़	जाटरायपुर लील्ली	15,406.90	3,851.90	11,555.00
125.	जोहड़ वाले खेत की मेड़बन्दी	ठुमरेला	1,559.00	780.00	779.00
126.	दरेशपुरा की तलाई	जांगरू	18,805.38	6,268.38	12,537.00
127.	भोमियां वाली तलाई	गढ़ी का वास	13,395.03	4,465.03	8,930.00
128.	बिदरका वाला जोहड़	बिदरका (गढी सवाईराम)	24,354.00	6,089.00	18,265.00
129.	घुन्नी वाली तलाई	गोण्डी-माणकपुर	17,211.37	5,737.37	11,474.00
130.	नाहर खोहरा एनीकट	नाहर खोरा	94,335.00	21,462.00	72,873.00
131.	सेढ वाली तलाई	पराकपुरा	14,150.40	4,717.40	9,433.00
132.	मेडा वाली जोहड़ी	मनकपुरा	10,320.75	3,440.75	6,880.00

तिजारा क्षेत्र					3,75,675.50
क्र.सं.	बांध/जोहड़ आदि कार्यों के नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
133.	बड़ा नाला का जोहड़	सरहटा	20,496.60	5,125.60	15,371.00
134.	बड़ा जोहड़ भेव वास'	सरहटा	25,845.71	6,462.71	19,383.00
135.	शाह कबीर का जोहड़	डोठाना	9,761.40	2,440.40	7,321.00
136.	सड़क पास वाली जोहड़ी	बाधोर	12,800.00	3,200.00	9,600.00
137.	शादीपुर का बाँध	तिज़ारा	30,827.50	10,276.50	20,551.00
138.	बैरिया वाला बाँध	बैरियाला तिजारा	5,976.00	1,992.00	3,984.00
139.	बिरजु की मेड़बन्दी	गोल बाग जेरोली	2,396.00	1,597.00	799.00
140.	मोडी वाला बाँध	हसनपुर तिजारा	928.00	-	928.00
141.	जाट मालियर, सार्वजनिक जोहड़	जाट मालियर	13,660.00	6,830.00	6,830.00
142.	बग्गी वाला बाँध	हसनपुर	18,563.00	6,188.00	12,375.00
143.	गढ़ डीला का बाँध	हसनपुर	8,698.00	2,900.00	5,798.00
144.	खेड़ा वाला बाँध	हसनपुर	13,077.00	4,359.00	8,718.00
145.	ईदगाह वाला बाँध	डोठाणा	44,881.00	14,981.00	29,900.00
146.	खोटा वाले खेत का बाँध	जाट मालियर	5,091.00	-	5,091.00
147.	उपकेन्द्र वाला बाँध	जाट मालियर	15,845.00	-	15,845.00
148.	सेढ़ वाले खेत का बाँध	जाट मालियर	5,621.00	-	5,621.00
149.	छोटा फूटा बाँध	जैस्तिका	8,854.50	2,656.00	6,198.50
150.	गल कटा का एनीकट	हसनपुर	45,168.00	33,176.00	40,042.00
151.	छतरी वाला जोहड़	जाट मालियर	20,561.00	5,140.00	15,421.00
152.	खेड़ा वाला जोहड़	जाट मालियर	12,225.00	4,085.00	8,170.00
153.	लाम्बी मोडी का एनीकट	हसनपुर	10,0799.00	12,590.00	88,209.00
154.	समसुद्दीन की मेड़बन्दी	हसनपुर	1,210.00	807.00	403.00
155.	अमरा का बाँध	जाट मालियर	3,685.75	2,457.75	1,228.00
156.	सेख वाला बाँध	हसनपुर माफी	52,806.00	17,602.00	35,204.00
157.	नई वाला मोड का बाँध	अलका,तिजारा	12,464.00	4,154.00	8,310.00
158.	पन्ना वाला एनीकट	जाट मालियर	8,995.00	4,620.00	4,375.00

बास किशनगढ क्षेत्र					1,55,667.00
क्र.सं.	बांध/जोहड़ आदि कार्यों के नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
159.	छतरी वाला पचवीर का जोहड़	तरवाला	39,308.50	9,828.50	29,480.00
160.	घाटी बीच वाला जोहड़	तरवाला	6,926.26	3,463.26	3,463.00
161.	मोथरिया बाँध	तरवाला	30,857.60	7,715.60	23,142.00
162.	बनिवाला जोहड़	जैस्तिका	41,590.00	19,466.00	22,124.00
163.	खोल का जोहड़	जैस्तिका	53,450.00	14,314.00	39,136.00
164.	छोटी पूठ का बाँध	जैस्तिका	28,490.00	6,154.00	22,336.00
165.	पीपल वाला एनीकट	न्याणा	11,700.00	2,400.00	9,300.00
166.	महेन्द्र वाला बाँध	भटकोल	6,686.00	शरीर श्रम	6,686.00
बानसूर क्षेत्र					**23,699.75**
167.	सोनी वाली कुण्डली का जोहड़	देवसन, बानसूर	12,854.00	3,214.00	9,640.00
168.	धवड़ी वाला जोहड़	देवसन, बानसूर	6,718.00	1,680.00	5,038.00
169.	नलिवाला बाँध	बुर्जा पाली ज्ञानपुरा	3,268.98	2,179.23	1,089.75
170.	बाबरिया का जोहड़	ज्ञानपुरा	23,796.00	15,864.00	7,932.00
रामगढ़ अलवर क्षेत्र					**23,089.00**
171.	पहाड़ी वाला जोहड़	गूजर वास खटेटा	30,787.24	7,696.63	23,089.00
उमरैण,अलवर, राजगढ़, थानागाजी क्षेत्र					**2,21,186.00**
172.	जोहड़ माला का जोहड़	क्रासका, सरिस्का	34,199.40	8,551.40	26,008.00
173.	काली दास जी वाला बाँध	सालेटा	6,988.00	2,330.00	4,658.00
174.	नाला का बाँध	नवलपुरा, राजगढ़	39,546.74	13,199.74	26,397.00
175.	टेटपुर पहाड़ी पर जोहड़	टेटपुर	25,274.00	10,240.00	15,034.00
176.	कुण्डल्या का बाँध	बनेटी पैहल मुण्डावर	70,122.00	23,041.00	47,081.00
177.	गांगडोली जंगल का जोहड़	काला छारा उमरैण	7,401.00	2,467.00	4,934.00
178.	माडला का जोहड़	दुहार चोगान	7,684.00	2,561.00	5,123.00
179.	दोगरा वाला जोहड़	मानावास थानागाजी	21,980.00	7,340.00	14,640.00
180.	गाबला डेक जोहड़	कुशालगढ़ उमरैण	13,243.00	4,414.00	8,829.00
181.	सार्वजनिक एनीकट	रहकामाला, थानागाजी	17,036.00	शरीर श्रम	17,036.00

क्र.सं.	बांध/जोहड़ आदि कार्यों के नाम	गांव/तहसील	कुल खर्च	श्रमदान	संस्था द्वारा भुगतान
182.	नानगराम का जोहड़	हरिपुरा (सरिस्का)	11,243.00	3,748.00	7,495.00
183.	अकाला के कुण्ड वाला बाँध	दुहारमाला	19,565.00	स्वश्रम	19,565.00
184.	धमाका वाला बाँध	दुहारमाला	9,070.00	स्वश्रम	9,070.00
185.	खान्या वाला जोहड़	करांट	7,565.00	2,522.00	5,043.00
186.	खजूर वाला जोहड़	हरिपुरा	15,409.50	5,136.50	10,273.00

लोक जुम्बिश परियोजना 1 अप्रैल, 1998 से 31 मार्च, 1999 तक संचालित गतिविधियां

क्र.स.	गतिविधियां	संख्या	माह	स्थान	पूर्ण गतिविधियां
1.	वातावरण निर्माण बैठकें	36	पूरा वर्ष	गाँवों मे	-
2.	प्रेरक दल प्रशिक्षण एवं ग्राम सभाऐं	36	"	गाँवों मे	एक वर्ष में 8640 "प्रशिक्षण + बैठकें"
3.	महिला समूह बचत बैंक	36	"	गाँव	4 महिला समूह बचत बैंक खाते
4.	सहज शिक्षा केन्द्र संचालन	23 केन्द्र	"	-	अलग-अलग गाँवों में "23 केन्द्र संचालन"
5.	महिला समूह प्रशिक्षण एवं भ्रमण	20	"	त.भा.सं./ गाँवों में	प्रत्येक माह अलग-अलग गाँवों मे "12 शैक्षणिक भ्रमण"
6.	साप्ताहिक बैठकें	25 अनुदेशक		त.भा.सं.	48 बैठकें
7.	अनुदेशक शैक्षणिक भ्रमण			त.भा.सं.	क्षेत्रीय भ्रमण 2 दिवसीय "एक"
8.	भवन निर्माण समिति प्रशिक्षण व शिविर	21	अप्रैल	किशोरी	2 दिवसीय "एक"
9.	दाई प्रशिक्षण	20		त.भा.सं.	2 दिवसीय "एक"
10.	बाल मेला	86		त.भा.सं.	5 दिवसीय "एक"
11.	पल्स पोलियो अभियान	51 गु.	दिसम्बर, जनवरी	गाँव-गाँव में प्रचार-प्रसार	किशोरी संकुल
12.	पर्यावरण प्रतियोगिता	160 बच्चों		8 स्कूलों से "त.भा.सं. में"	त.भा.सं. के कार्य का स्व: मूल्यांकन
13.	B.R.P.M.	25		थानागाजी	प्रत्येक माह कार्यों की समीक्षा बैठक
14.	C.R.P.M.	4		त.भा.सं.	प्रत्येक माह कार्मिकों की बैठक
15.	C.R.T.			त.भा.स./ सरकारी स्कूल	प्रत्येक माह
16.	केन्द्र अवलोकन	23 केन्द्र	सभी महीनों में सतत	-	पूरा वर्ष

राजस्थान की वैकल्पिक जल नीति

प्रारूप निर्माण

तरुण भारत संघ ने "राजस्थान की वैकल्पिक जल नीति के प्रारूप निर्माण" हेतु मार्च, 1998 से फरवरी, 1999 तक पूरे प्रदेश भर में चालीस कार्यशालायें आयोजित कीं। पदयात्रायें तथा जन चेतना शिविर, सम्मेलन के दौरान राजस्थान की प्रस्तावित जल नीति के सभी पहलुओं का अध्ययन किया। उसकी त्रुटियों को जनता के सामने रखा गया। जल नीति के निर्माण के संदर्भ में राजस्थान के जिलों में विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से जो कार्यशालाएं आयोजित हुईं उनमें अजमेर, झाडोल, देवला, जयसमंद, चित्तौड़गढ़, रायसिंह, बाड़मेर, पूगल, श्रीगंगानगर, भरतपुर, जवाजा, ब्यावर, जैसलमेर, नाथद्वारा व भीकमपुरा आदि प्रमुख हैं। इन कार्यशालाओं के दौरान हुए जन संवाद में से जो तथ्य सामने आये उनके आधार पर राजस्थान की वैकल्पिक जल नीति का प्रारूप तैयार किया गया तथा इस प्रारूप को पुन: विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों के पास उनके अन्तिम सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने के लिये भेजा गया।

इसी क्रम में राजस्थान के संबंधित सरकारी विभागों के साथ अनेक बैठकों का आयोजन करके समाज की बातचीत को धैर्यपूर्वक सुना व समझा गया। वहां जन सुनवायी, कार्यशालाओं व बैठकों के दौरान लोगों की तरफ से आये मुद्दों व सुझावों को भी अधिकारियों, न्यायविदों के समक्ष प्रत्यक्ष रखा गया। जन दबाव बनाने के लिये पदयात्रायें व विभिन्न जन सभाओं का आयोजन व दस्तावेजीकरण करके प्रेस के माध्यम से भी इस प्रारूप को प्रचारित व प्रसारित किया गया। हिन्दी में इसे एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करके पूरे प्रदेश में पहुँचाने का प्रयास किया। इस पर सुझाव माँगे। 19 दिसम्बर, 98 को भीकमपुरा में प्रदेश भर के किसान प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में सरकारी तथा गैर सरकारी, न्यायविद्, कानूनविद्, पत्रकार, विद्वान, वैज्ञानिक भागीदार रहे। सर्वसम्मति से पारित प्रारूप राजस्थान के मुख्यमंत्री व संबंधित विभाग के सचिव एवम् मंत्री को प्रस्तुत किया गया। इस प्रक्रिया से तैयार प्रारूप का प्रभाव यह रहा कि राजस्थान सरकार ने अपने जल नीति के प्रारूप को बदलकर नया प्रारूप तैयार किया है। इस प्रारूप में तरुण भारत संघ द्वारा तैयार किये गये प्रारूप के सभी मुख्य सुझावों को शामिल कर लिया है।

हम इस अनुभव के आधार पर भारत में एक अच्छी जल नीति बनवाने हेतु प्रयासरत हैं। भारत के जल संसाधन मंत्री श्री सोमपाल जी ने तरुण भारत संघ में आकर इस हेतु आह्वान भी किया है। हमने उनके इस आह्वान को स्वीकार करके यह कार्य करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। भारत की वैकल्पिक जल नीति के प्रारूप निर्माण की प्रक्रिया जारी है।

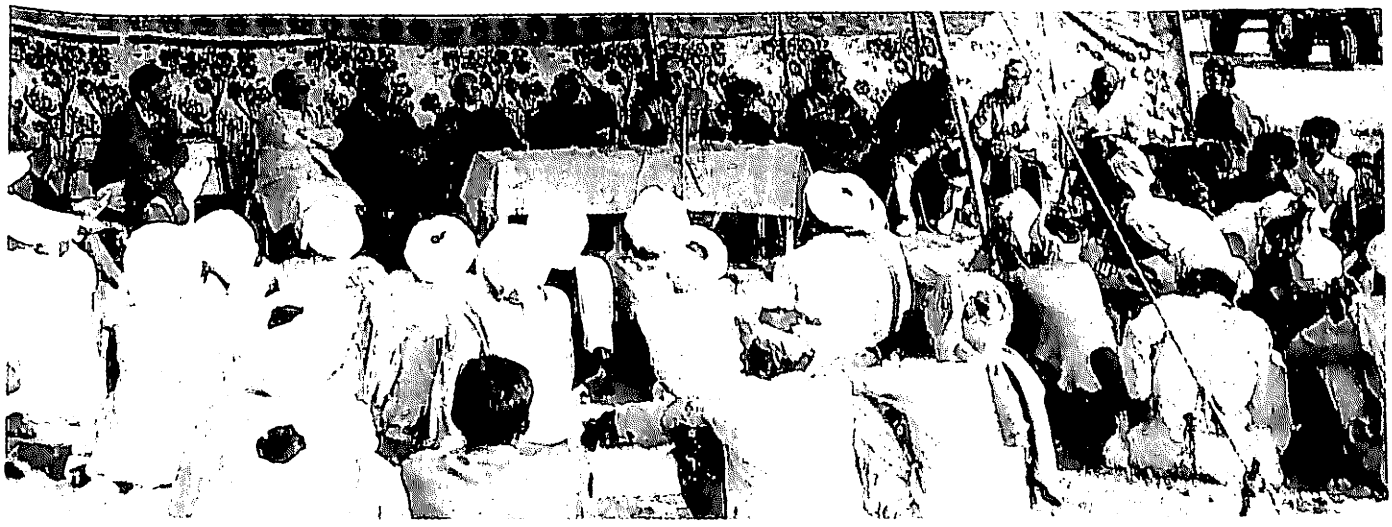

ग्राम स्वराज्य की दिशा में बढ़ते कदम

अरवरी संसद

तरुण भारत संघ और गांव वालों के सम्मिलित प्रयास से पुनर्जीवित हुई पाँच नदियों में से एक का नाम है अरवरी नदी। यह नदी भांवता-कोल्याला से उद्‌गम लेकर लगभग 45 किलोमीटर की दूरी तय करती हुई सेंथल सागर में विलीन हो जाती है। पूरी नदी का कुल जलागम क्षेत्र 503 वर्ग किलोमीटर है। यह अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के तेज ढलान में होती हुई बहती है जिसके पनढाल में मध्यम स्तर की ऊँचाई वाली पहाड़ियाँ हैं। नदी के पूरे जलागम क्षेत्र में 70 से अधिक छोटे-बड़े गांव पड़ते हैं। जिनमें से 34 गांव तो नदी के किनारे पर ही बसे हुए हैं। कहा जाता है कि जब नदी के जलागम क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में जंगल मौजूद था तब यह नदी वर्ष भर बहती रहती थी। परन्तु धीरे-धीरे जंगल समाप्त हो गया और 50-60 वर्ष पहले नदी बिल्कुल सूख गई।

1985 से 1997 के मध्य अरवरी नदी के जलग्रहण क्षेत्र में तरुण भारत संघ ने 250 से भी अधिक छोटी-बड़ी जल एकत्र करने वाली संरचनाओं (जोहड़, बांध, एनीकट, चेकडैम, मेड़बन्दी, नालाबन्डिंग, ब्रेकर खुश आदि) का निर्माण किया तथा इसके जलागम क्षेत्र के अधिकांश हिस्से में गंवाई दस्तूर बनाकर जंगल संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य पूरे समर्पण, लगन, निष्ठा व प्रतिबद्धता से किया। परिणाम सुखद घटना के रूप में सामने आया और सूखी पड़ी नदी पुनर्जीवित हो उठी। चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ गयी। 26 जनवरी, 1999 को नदी के जलागम क्षेत्र में पड़ने वाले सभी गांवों ने मिलकर ग्राम स्वराज का उद्‌घोष करते हुए 'अरवरी संसद' नामक संगठन का गठन किया जिसमें प्रथम अध्यक्ष का पद-भार श्रद्धेय श्री सिद्धराज ढड्‌ढा ने संभाला। जलागम क्षेत्र के प्रत्येक गांव की ग्राम सभा ने अपने गांव से एक या दो प्रतिनिधियों का चयन कर उक्त संसद की कार्यवाही हेतु अधिकृत किया। इन अधिकृत सांसदों ने 26 से 28 जनवरी, 1999 को हमीरपुर गांव में पावन अरवरी तट पर एक विशाल सभा का आयोजन किया। नदी के जलागम क्षेत्र में पड़ने वाले गांवों और ग्रामीणों के लिये सर्वसम्मति से एक आचार संहिता, अपने गांवों में स्वप्रेरणा से संचालित किये जाने वाले नियम-कानून अर्थात् अरवरी संविधान का निर्माण किया गया। इस प्रकार भारत ही नहीं अपितु विश्व इतिहास में दर्ज की जा सकने वाली घटना का सूत्र-पात किया गया। अरवरी सचिवालय निर्माण हेतु भी प्रस्ताव पारित किया गया। अपने संसाधनों के प्रति आयी चेतना, उनके संरक्षण, संवर्धन और मर्यादित उपयोग के प्रति लोगों में आये रुझान और इन सबके पीछे रहकर कार्य कराने वाली संस्था त.भा.सं. की कार्यशैली और उसके द्वारा लोगों को जाग्रत करने तथा उनमें प्राण-फूंकने का कार्य (परिणाम) ही अरवरी संसद है।

1986 में नदी के जलागम क्षेत्र में मात्र 10 प्रतिशत भूमि पर ही खेती की जाती थी जो आज बढ़कर 30 प्रतिशत सिंचित खेती हो गई है। बढ़ती खेती और नकदी फसलों की पैदावार को नियंत्रित करने और गांव के प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन की समस्याओं से निपटने के लिये निर्मित इस अरवरी संसद की दूसरी सभा 16 फरवरी, 1999 को पड़ाक-छापली गांव में हुई। संसद के सभी कार्यों को सुचारु रूप से गतिमान रखने के लिये एक संसदीय समिति का गठन तो 28 जनवरी को ही कर लिया गया था। 16 फरवरी की सभा में संसदीय समिति के सदस्यों की संख्या 15 से बढ़ाकर 22 की गयी। पड़ाक-छापली के अधिवेशन में उपस्थित लगभग 250 लोगों ने सर्वसम्मति से क्षेत्रीय

कृषि समिति, क्षेत्रीय जल समिति एवं क्षेत्रीय वन समितियों का भी गठन किया। इस अरवरी संसद का अगला अधिवेशन 5-6 जून, 1999 को समरा गांव में होना तय हुआ है। इस प्रकार इस क्षेत्र के लोग अरवरी संसद के गठन से उत्साहित और प्रेरित होकर ग्राम स्वराज और ग्राम स्वावलम्बन की दिशा में कदम-ब-कदम बढ़ाते ही जा रहे हैं। त.भा.सं. अन्य पुनर्जीवित हुई नदियों के जलागम क्षेत्रों में भी ऐसी ही क्षेत्रीय संसदों के गठन एवं संचालन हेतु लोगों को सतत प्रोत्साहित कर रहा है।

जीव मात्र की प्राथमिक समस्या : पेय जल

मानव ही नहीं अपितु जीव मात्र की उत्पत्ति जिन पाँच महाभूत तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से हुई है, उनमें जल का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। जल के बिना जीवन सम्भव ही नहीं है। जल के सम्बन्ध में महाग्रन्थों का निर्माण अनायास ही किया जा सकता है। पृथ्वी की जल सम्पदा सचमुच विशाल और असीम प्रतीत होती है। पृथ्वी की तीन-चौथाई सतह पानी के नीचे है। किन्तु यह सब जल हमारे लिये उपलब्ध नहीं है। महासागरों में 97 प्रतिशत जल विद्यमान है, जो खारा है। हिमानियों और पर्वत शिखरों पर दो प्रतिशत से कम जल ही मीठे पानी की झीलों, नदियों और भू-मंडल भंडारों में मौजूद है जिसका हम उपयोग कर सकते हैं। मीठे पानी की इस बहुमूल्य राशि में आयी कमी को वर्षा निरन्तर पूरी करती रहती है। यदि वर्षा न हो तो नदियां, कुएं और झीलें सूख जायेंगी और सभी जीवधारी इस भूमंडल से विलुप्त हो जायेंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक मात्र वर्षा का ही जल वह शुद्ध जल है जिससे जीव जगत का उचित संचालन होता है। परन्तु आज मानव नाम का यह जीव प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड़-छाड़ कर उसके प्राकृतिक क्रम में निरन्तर बाधक बनता जा रहा है। प्रकृति संचालित व नियंत्रित 'जल-चक्र' को मानव ने अपनी गतिविधियों के द्वारा न केवल बाधित किया अपितु नष्ट भी कर डाला है। मानव ने भू-मंडल पर फैले अधिकांश जंगलों का सफाया कर डाला है। जंगल प्रकृति प्रदत्त वह यन्त्र है जो वर्षा के पानी को रोक कर जमीन के पुनर्भरण की प्रक्रिया को स्वत: ही पूरा करता है। जंगलों के नष्ट होने से वर्षा का जल भूमि की उपजाऊ मिट्टी को काटता हुआ उसे साथ लेकर नालों-नदियों द्वारा सीधा समुद्र में चला जाता है। अर्थात् प्राणी मात्र को प्रकृति प्रदत्त शुद्ध जल, मानव की अनावश्यक व अनुचित गतिविधियों के कारण उसकी पहुँच से दूर निकल जाता है। मानव ने यहाँ पर भी विराम नहीं लिया अपितु जीवनदायिनी नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को अवरुद्ध कर डाला है। विज्ञान के सहारे खड़े किये गये बड़े-बड़े उद्योगों द्वारा मीठे जल के स्रोतों को प्रदूषित कर दिया और फिर भू-सतह के नीचे के मीठे जल को गहरे-गहरे नलकूप (ट्यूब वेल) लगाकर धरती माता को निर्जल कर रहा है।

उक्त कार्यवाहियों के अतिरिक्त अन्य ऐसी गतिविधियां अबाध गति से संचालित कर रहा है कि जिनका परिणाम आने वाले कुछ ही वर्षों में महा-भयंकर और अत्यन्त विनाशकारी होगा। जल के अभाव में इस भूमंडल से मानव ही नहीं जीव मात्र का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। तब न मानव रहेगा और न ही लालच तथा स्वार्थ द्वारा पोषित उसका झूठा घमंड और दिखावा। प्रकृति के साथ किये गये इस क्रूर-कर्म का दण्ड प्रकृति उसे अवश्य देगी। अभी समय है, मानव अपने इन अज्ञानतापूर्ण कार्यों से बाज आये और प्रकृति को उसके, सहज-सरल और सतत कार्य को स्वच्छन्द रूप में करने दे। प्रकृति के कार्यों में अवरोध के बजाय सहयोग करे। जितना प्रकृति से लिया जाये उससे अधिक उसे लौटाया जाये और 'तभासं' की तरह प्रकृति के साथ कदम से कदम मिलाकर चले एवं उसके सतत कार्य में सहयोग करे।

तभासं ने पिछले चौदह वर्षों में लगभग 3000 से भी ऊपर जल एकत्र करने वाली संरचनाओं का निर्माण तथा बहुत बड़े क्षेत्र में जंगल संरक्षण का कार्य किया है। वह भी ग्रामीण लोगों को साथ लेकर उन्हें जाग्रत कर, उनसे सहयोग लेकर। इन संरचनाओं के द्वारा जल के प्राकृतिक चक्र में सकारात्मक सहयोग भू-जल पुनर्भरण के रूप में सामने आया है। पूर्वी राजस्थान के जिन क्षेत्रों में यह प्रक्रिया सम्पादित की गई वहां तेजी से घटता भू-जल स्तर अपने पूर्ववत स्थान पर आ रहा है। गांव-गांव में सुख शान्ति व समृद्धि की लहर दौड़ गई है। लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठा है। महिलाओं को तो सबसे अधिक आराम और सन्तोष प्राप्त हुआ है क्योंकि पहले उनका 70 प्रतिशत समय ईंधन तथा पेयजल का जुगाड़ बिठाने में ही चला जाता था। फसलें कई गुना बढ़ी हैं। साथ ही ईंधन, चारा, दूध व अन्य आवश्यक चीजों की उपलब्धता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। रोजगार बढ़ने से पलायन में कमी आयी है।

जब पेट भरा हो तभी दूसरी बातें सूझती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि सभी बातों पर लोगों का ध्यान बढ़ा है। राष्ट्रीय समृद्धि के सभी मापांकों की तरफ अब यह क्षेत्र जिसे त.भा.सं. का कार्यक्षेत्र भी कहा जा सकता है, सतत अग्रसर हो रहा है। परन्तु क्या हम लक्ष्य पर पहुँच गये हैं ? नहीं ! लक्ष्य अभी काफ़ी दूर है। यही मानकर 'संघ' प्रगति व सफलता के इस पावन मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है। अपने कार्यों को सघन और व्यापक बनाता जा रहा है। ग्राम स्वावलम्बन व ग्रामस्वराज्य की कल्पना साकार करनी है।

आज पूरे विश्व के सभी मानव समुदायों को अपने यहां भी इसी प्रकार के काम करने की अत्यन्त आवश्यकता है। सरकारों के भरोसे इन कार्यों को नहीं छोड़ा जा सकता। क्योंकि सरकारें केवल आश्वासन दे सकती हैं। आश्वासन का इन्तजार किये बिना भू-जल पुनर्भरण के काम को, लोग स्वयं अपने हाथों से कर रहे हैं। यह कार्य चारों तरफ फैलेगा ऐसा विश्वास है क्योंकि यह कार्य अपना हाथ जगन्नाथ करता है। आत्मगौरव व आत्मसम्मान बढ़ाता है।

'जल संकट' का निवारण : छोटे बांध एवं जंगल विकास

आज भारत ही नहीं विश्व के सामने सबसे भयानक संकट जो विकराल दानव की तरह मुंह खोले, सम्पूर्ण जीव मात्र को काल के गाल में धकेलने के लिये खड़ा है, वह है 'जल संकट'। आने वाली इक्कीसवीं शताब्दी इस महा-भयंकर और विनाशकारी संकट को साथ लेकर हमारे सामने आयेगी। दुनिया के सबसे अधिक झगड़े इस नई शताब्दी में जल के लिये ही होंगे। यदि आज का मानव अपनी दूर दृष्टि से इस आने वाली नई विपत्ति को भांपकर सचेत न हुआ तो भूमंडल पर जीव-विनाश निश्चित है। आज के सन्दर्भों में प्रचलित है कि सभी झगड़ों के मूल कारण केवल तीन हैं- जर, जोरू और जमीन। लेकिन आगन्तुक शताब्दी में उक्त कहावत बिल्कुल बदल जायेगी और नई कहावत होगी 'सभी झगड़ों का मूल- पानी केवल पानी।'

संसार की सभी प्राणवान वस्तुओं के लिये आवश्यक तत्व है पानी। पानी में ही करोड़ों वर्ष पहले प्राणवानों का उद्‌भव हुआ और पानी के लिये ही आपस में लड़ेंगे तथा बिना पानी विनाश के द्वार तक जायेंगे। ये प्राणवान प्राणवायु अर्थात् ऑक्सीजन का जब एक अणु मिलता है हाइड्रोजन के दो अणुओं से, तब निर्माण होता है शरीर हेतु अति आवश्यक तत्व, जल का। इससे स्पष्ट हो जाता है वह कारण, कि क्यों आवश्यक है जल हम सभी जानदारों के लिये। यदि हमने चेतकर अपने लिये शुद्ध जल की उचित व्यवस्था नहीं की तो शायद इक्कीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध

हम देख नहीं पायें। तो फिर यदि हम सचेत भी हो जायें तो ऐसी क्या व्यवस्था करें कि हमारी आने वाली नस्लें, जल संकट से स्वयं को मुक्त कर सकें। किससे पूछें ? किससे समझें ? कहाँ जायें ?

उत्तर है 'तरुण भारत संघ'। जिसने एक ऐसी व्यवस्था, एक ऐसी युक्ति, एक ऐसे तरीके को खोज निकाला जो हमारी संस्कृति, हमारे समाज में से सैकड़ों वर्षों पहले खो गयी थी। भौतिकवाद की चमक-दमक, सरकारों के झूठे आश्वासनों और स्वयं तथा प्रकृति से दूर हटने का नतीजा था, कि अपने पूर्वजों द्वारा पोषित, परिमार्जित और विकसित विज्ञान को हम भूल बैठे; और बढ़ चले एक अनजान राह पर, जो जाती है महाविनाश की ओर। संघ ने न केवल उस विज्ञान को लम्बी शोध के बाद ढूंढा अपितु समाज की धुंधली स्मृतियों में सोये उस ज्ञान को, गांव-गांव में क्षत-विक्षत होकर बिखरे पड़े अवशेषों को; एक सूत्र में पिरोया और उसको पुन: प्रतिष्ठित कर हजारों प्रयोग कर डाले समाज को साथ लेकर, समाज को सहभागी बनाकर। उस पारम्परिक ज्ञान-विज्ञान को हर प्रकार से जांचा, परखा और कसौटी पर सोलह आने खरा पाया। अन्तत: प्रयोग करते-करते जब त.भा.सं. ने एक क्षण के लिये आँख खोली तो स्वयं भी आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि उसके प्रयोगों के दौरान ही उस क्षेत्र में जहाँ प्रयोग किये गये थे सैकड़ों वर्षों से सूखी पड़ी पांच नदियाँ पुनर्जीवित हो उठीं, बारह महीने बहने लगीं। तब संघ पुन: जुट गया अपने उन्हीं प्रयोगों में गहरे और अधिक समर्पण और प्रतिबद्धता से। संघ ने साथ ही निष्कर्ष निकाला कि एकमात्र तरीका जल संकट से निबटने का है वह लोक विज्ञान और यह परम्परागत ज्ञान ही है। यही तरीका इक्कीसवीं शताब्दी में हम प्राणवानों (मानव, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे) को जल संकट से निजात दिलायेगा। आज संघ 700 गांवों में लोगों की सक्रिय सहभागिता लेकर अपने इस अनुसंधान को मूल मूल्यगत स्वरूप दे रहा है। इस विज्ञान में लोगों की अपनी देशज तकनीक का आधार बनाकर नये सन्दर्भों में नये आयाम देकर नये मगर सहज रूप में लोगों के मध्य प्रतिष्ठित कर, इसके क्रियान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में सतत प्रयत्नशील है। आने वाले वर्ष 1999-2000 में संघ का कार्यक्षेत्र 1000 गांवों में फैल जायेगा। संघ का मूलभूत सिद्धांत है 'जहाँ लोग तैयार हों वहीं काम करो'। शेष बचे लोग, किये गये कामों से प्रभावित होकर स्वयं प्रभावी कार्य करने हेतु आगे आयेंगे। काम भी दूर-दूर तक फैलेगा और समाज भी स्वत: ही इन कामों में मात्र अल्प प्रयास से जुट जायेगा।

संसार की कोई क्रिया बिना उत्प्रेरक के संपादित नहीं होती। अत: संघ ने निर्णय लिया है कि आने वाले कुछ ही वर्षों में राजस्थान के 10 जिलों में 10 उत्प्रेरक केन्द्र भी स्थापित किये जायेंगे। जहाँ से लोगों को प्रशिक्षित कर, उत्प्रेरण का सतत कार्य भी किया जा सकेगा। जिसका प्रमुख नारा होगा 'जोहड़ बनाओ पेड़ बचाओ'। इसी नारे में छिपा है जल संकट निवारण का मूल मन्त्र अर्थात् छोटे-छोटे जोहड़, बांध, एनीकट, चेकडैम, मेड़बन्दी, नालाबन्डिंग आदि बनाने के साथ-साथ जंगल संरक्षण और संवर्धन द्वारा जीव मात्र की जल समस्या का हल पाया जा सकता है।

जल से जंगल व जंगली जीव आये

सरिस्का में जलसंरक्षण काम का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। जल से जंगल, जंगली जीवों की चहल पहल लौट आई। पर्यटकों का आवागमन बढ़ने के साथ-साथ सरिस्का से बाहर निकलते समय उनके चेहरे की रौनक भी बढ़ी है। पेड़ों का छायाकार रूप सघन और गहरा बना है। यह सब जंगल में रहने वाले समाज की जंगली जीवों के प्रति बनी समझ का ही परिणाम है। समाज की समझ बनाने का काम तरुण भारत संघ ने किया है। सरिस्का के गरीब लोगों को संगठित करके खनन माफिया से, खदान बन्द कराके, बाघ की सरिस्का में वापसी सम्भव हुई है। जंगलात विभाग तो खनन माफिया से डरकर वन भूमि को भी अपनी भूमि बताने से मुकर रहा था। आज वन विभाग भी अवैध खनन बन्द कराने की हिम्मत करने लगा है। यहाँ पर भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी भी कुछ कम हुई है।

सरिस्का दस वर्ष पहले वीरान सा हो गया था। बाघ भी यहाँ से लुप्त होने लगा था। उसका भोजन सियार, चीतल, नीलगाय की हड्डियाँ जगह-जगह सरिस्का के सूखे कुओं में भर दी थी। सरिस्का के बफर क्षेत्र में जहाँ नजर डालें, वहीं खनन दिखाई देता था, इतना ही नहीं, कोर क्षेत्र भी खनन की चपेट में था। पानी के सब स्रोत सूख गये थे। टैंकर से कुछ जगह पानी भरा जाता था, वहां रात को शिकारी बैठ जाता था। यही कारण था राजीव गांधी मंत्रि-मण्डल के तीन दिन के पड़ाव में सरिस्का के अधिकारी जी-तोड़ मेहनत के बावजूद बाघ नहीं दिखा सके थे।

सरिस्का में दो बच्चों के साथ बाघिन देखी गई, यह देखकर मैं आश्चर्यचकित नहीं हुआ। क्योंकि एक विदेशी पर्यटक ने चार बाघ एक साथ देखे थे। सरिस्का गेट तथा कालीघाटी का रजिस्टर इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि इस वर्ष प्राय: प्रतिदिन बाघों के दर्शन हो रहे हैं। इसी कारण इस वर्ष सरिस्का पैलेस की आय दो गुनी हो गई है। सरिस्का में आज बाघ की वापसी कोई एक दिन का काम नहीं है, बल्कि इस क्षेत्र में रहने वाले समाज की समझदारी का परिणाम है।

सरिस्का के अन्दर बसे सभी गांवों ने अपने-अपने गांव में जलसंरक्षण हेतु बांध/ जोहड़/ एनीकटों का निर्माण किया। इनसे पुनर्भरण की प्रक्रिया तेज हुई। इस प्रक्रिया को तेज करने वाले तरुण भारत संघ व समाज ने सरिस्का में डेढ़ सौ से अधिक जोहड़ बनाये हैं। देवरी जैसे गांव में नौ जोहड़/तीन बांध बनाये हैं। इसी प्रकार मांडलवास में पाँच तो मथुरावट में दो बनाये। सरिस्का के सभी कोर बफर क्षेत्र में ये जल संरक्षण कार्य हुए हैं। इन्हें देखकर अब वन विभाग ने भी कुछ एनीकटों का निर्माण कराया है जैसे- सलोवका, सिलीबेरी, घमोडी-घानका आदि। जल संरक्षण कार्य के साथ-साथ ग्रामवासियों ने जंगल बचाने का कार्य किया। शिकारियों को धर दबोचकर दण्डित करने का भी काम किया। इस कार्य को भी जल संरक्षण की तरह विभाग प्रोत्साहन देता तो सरिस्का से शिकार की समस्या हमेशा के लिये खत्म हो जाती।

दस वर्ष पहले सरिस्का के कोर क्षेत्र के देवरी गांव ने अपने गांव में वन चौकी खत्म कर दी थी। उस समय इस गांव से एक वर्ष में नब्बे हजार रुपये का अनाज-घी-दूध, गाय, बकरी रिश्वत में वनकर्मियों को चली जाती थी। आज हालात बदल गये हैं। अब देवरी गांव से एक रुपये की रिश्वत भी नहीं जाती। रिश्वत और जंगल का गहरा रिश्ता है। रिश्वत बन्द तो जंगल की कटाई बन्द। यह बात शत-प्रतिशत सब जगह खरी नहीं तो भी 97 प्रतिशत जगह खरी उतरी। हरिपुरा में गार्डों को चार वर्ष तक गांव में नहीं घुसने दिया था। इसी प्रकार सीलीबावड़ी गांव ने वन चौकी

नहीं बनने दी थी। नाहरसती का डण्डा भी तोड़ दिया था। अभी कुछ दिन पहले ही रिश्वत से पेड़ कटते सरिस्का में पकड़ा गया है। फिर भी आज खुल्ले आम सरिस्का की कीमती लकड़ी दिल्ली के बाजार में नहीं जा रही है। अब ऐसी तिमाही/ छमाही एकाध घटना होती है। पहले तो रोज ऐसा ही होता था। तिमाही-छमाही घटना का बोझ भी सरिस्का के लिये भारी है। सरिस्का की कई दूसरी समस्याएं भी हैं - गाँवों का विस्थापन आदि। समस्याओं के होते हुए भी सरिस्का का जंगल अच्छा हो रहा है। यह सबको समझना जरूरी है।

हमें गांवों के विस्थापन का दूसरा पहलू भी समझना चाहिए। क्या लोगों के रहते भी जंगल अच्छा बन सकता है ? इस दिशा में सरकारी प्रयास अभी तक नहीं हुआ है। इस प्रयास की आवश्यकता है। अप्रैल माह में भी सरिस्का के अन्दर जगह-जगह जल दिखता है। इस जंगल से ही सरिस्का में हरियाली फिर आयी है। जगह-जगह पानी होने से जंगली जीवों का विभाजन अपने आप ठीक से हो गया। चीतल-सांभर, रोज, नीलगाय बाहुल क्षेत्र आज अलग-अलग स्पष्ट दिखाई देते हैं। बाघों के क्षेत्र भी ठीक से विभाजित हैं। अभी कुछ स्थान ऐसे हैं, जहाँ पर जल संरक्षण कार्य करना शेष है। ग्रामवासी व तरुण भारत संघ से मिलकर जहाँ कार्य हो सकता था, वहाँ तो सब स्थानों पर जल संरक्षण कार्य कर दिया है। अब कुछ स्थान ऐसे बचे हैं, जिन पर विभाग से मिलकर ही जलसंरक्षण कार्य किया जा सकता है। तरुण भारत संघ ने नाहरसती तथा अन्य स्थानों की पहिचान करके उन पर कार्य कराने हेतु सहयोग करने की विभाग से पेशकश की है।

सरिस्का के चप्पे-चप्पे में जल होगा तो ही पक्षियों की संख्या बढ़ पायेगी। पक्षी बढ़े तो ही सरिस्का की जैविक विविधता का संरक्षण माना जायेगा। जंगल में रहने वाले वनवासी स्वेच्छा से हट सकें तो अच्छा है। यहाँ के लोगों में जंगली जीवों को बचाने की समस्यायें नहीं हैं। उन्हें हटाने का सहज, लेकिन समयबद्ध प्रयास करना चाहिये। 35 वर्ष से गांव हटने की बात चल रही है, लेकिन आज तक सरकार एक भी गांव सफलतापूर्वक नहीं हटा पाई। यदि हटा नहीं पा रहे हैं, तो जंगली जीव बचाने के कार्यों में सरकारी प्रयास भी किया जाये। ऐसा करने के तो परिणाम अच्छे होंगे।

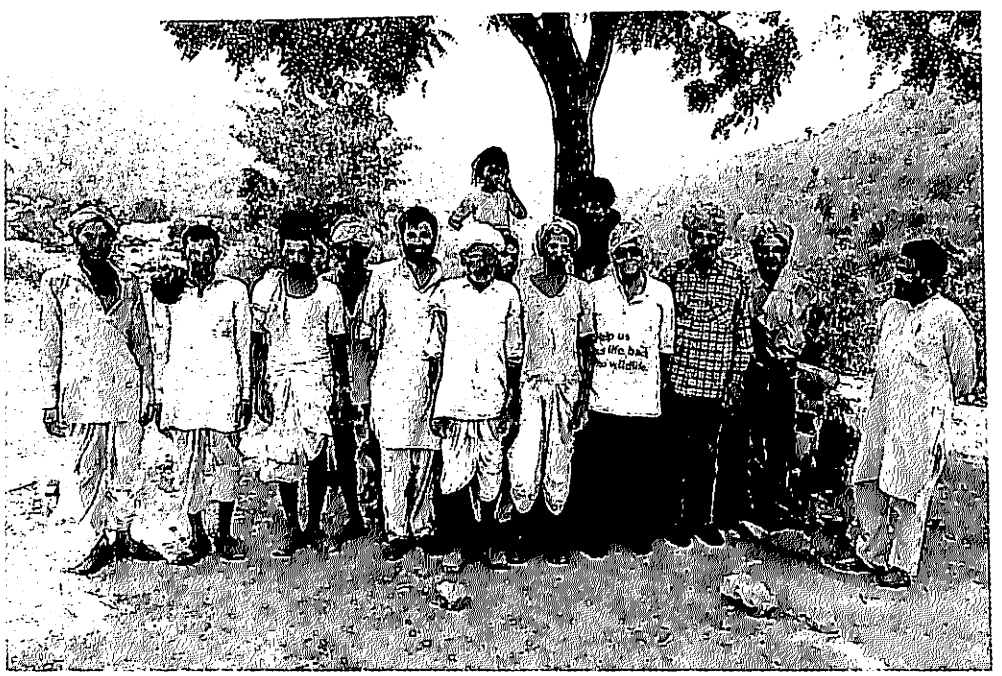

जलसंरक्षण करने वाला समाज जंगल व जंगली जीव संरक्षण करेगा ऐसा अभी तक का अनुभव है। इससे समाज में प्रकृति प्रेम भी बढ़ेगा। सरिस्का के चारों तरफ रहने वाला समाज प्रकृति प्रेमी बने, इस हेतु हमें अधिक काम करने की जरूरत है। तभी सरिस्का के जंगल, जंगली जीव बचे रहेंगे। आज की तरह बाघ के दर्शन भी सहज होंगे। सभी जंगली जीव यहाँ आयेंगे। वे निर्भय होकर विचरण करेंगे।

पावड़ी : माह अप्रैल, 1998 से 31 मार्च, 1999 तक का वार्षिक प्रगति विवरण

क्र.सं.	कार्यक्रम	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक.	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	कुल
1	जन सम्पर्क बैठकें	17	16	17	15	16	17	13	15	19	13	14	15	187
2	जल ग्रहण क्षेत्र में भ्रमण	24.5.98 पिपलाई से गूगली 15				17.8.98 Ist-IIIrd इकाई 15							31.3.94 अर.वाटरशैड	3
3	राज्य स्तरीय शैक्षणिक भ्रमण				20-21 जुलाई 2 दिवस जहाज 25		21-26 सित. 43 महिलाओं							2
4	राज्य से बाहर शैक्षणिक भ्रमण	27-28 अप्रैल राज्य से बाहर गुड़गांव									2.1.99 से 11.1.99			2
5	लोक समिति प्रबन्ध प्रशिक्षण		22-23 मई सीलीबावड़ी -29	24 जून 25-26 गुढ़ाकिशोरदास जून कुण्डला 130	अजबगढ़-15 जून 20,28/29	24-25 अगस्त अजबगढ़	3 सित.बाछड़ी					25-26.2.99 अजबगढ़ चार गाँव	31 मार्च त.भा.सं.	8
6	महिला समूह प्रशिक्षण			19.6.98 किशोरी		29.8.98 अजबगढ़ -125				28 दिस. अजबगढ़		18-19.2.99 5 गांवों का त.भा.सं.		4
7	किसान मेला					26 अगस्त अजबगढ़ 150								1
8	सांस्कृतिक कार्यक्रम		25-30 मई तक											1
9	प्रवेश बिन्दु गतिविधियां										1	4	5	10
10	P.V.T.P.								10 गांवों में P.V.T.P. की					
11	लोक समिति बदलाव व गठन					2		25						27
12	कार्यकर्ता प्रशिक्षण	22-24 अप्रैल	8-10 मई 14 मई										26-28 मार्च त.भा.सं.	4
13	पद यात्रा									18.12.98 चार दलों का				1
14	कार्ययोजना		प्रथम Ist-12V IInd-9V IIIrd-14V											35

5 मार्च, 1999 को कार्यकर्ताओं द्वारा किये गये अपने काम की मूल्यांकन रिपोर्ट

तरुण भारत संघ का समाज के साथ संवाद के तरीके

समाज के साथ संवाद करने में पदयात्राओं का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ' 'जोहड़ बनाओ, जल बचाओ' तथा 'ग्राम स्वराज्य' ये तीन ही पदयात्राओं के मुख्य विषय रहे हैं। पदयात्रा के दौरान गाँवों में सभा की जाती है, पदयात्राओं के विषय के अनुसार गीत गाये जाते हैं तथा दीवार लेखन किया जाता है।

जन चेतना हेतु पदयात्रा के अलावा जनसम्पर्क सभा, शिविर सम्मेलन, शैक्षणिक भ्रमण, गीत, फिल्म्स, नुक्कड़ नाटक, स्लाइड शो, संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, साहित्य का उपयोग किया जाता है।

संवाद को व्यवहार में बदलने की प्रक्रिया

संवाद के जरिये आपस में प्रेम की भावना पैदा होती है। संस्था इस भावना के द्वारा समाज के उद्देश्य में स्पष्टता, चरित्र में ऊँचाई तथा विश्वास को व्यवहार में बदलती है। विश्वास के साथ सच्चाई व ईमानदारी से समाज की योजना का निर्माण होता है जिससे समाज में आस्था पैदा होती है। इसी आस्था की नींव पर समाज का काम शुरू होता है। काम के दौरान समाज की यह आस्था श्रद्धा में बदलती है, जो बड़े से बड़े काम को सहज रूप से पूर्ण करने की समाज को शक्ति देती है। इस प्रकार का हमारा संवाद, समाज के व्यवहार में बदल जाता है।

तरुण भारत संघ के कार्य का कार्यकर्ताओं के व्यवहार पर प्रभाव

(I) कार्यकर्ताओं पर प्रभाव -

1- कार्यकर्ताओं में स्वयं का काम स्वयं करने की भावना बढ़ी है।
2- श्रम के प्रति निष्ठा बढ़ी है जिससे कार्यकुशलता एवं कार्यक्षमता बढ़ी है।
3- कार्यकर्ता की समझ व ज्ञान में वृद्धि हुई है।
4- आत्मविश्वास बढ़ा है, जिससे कार्यकर्ताओं में निर्भयता आई है।
5- सहनशक्ति में वृद्धि हुई है।
6- गाँव स्तर पर संसाधनों की समृद्धि एवं तथाकथित विकास का अन्तर कार्यकर्ताओं की समझ में स्पष्ट हुआ है।
7- कार्यकर्ता के जीवन में समग्रता आई है। जीवन को नई दिशा मिली है, दृष्टि में बदलाव आया है तथा जीवन में स्थिरता आई है।
8- कार्यकर्ता में समाज के प्रति कृतज्ञता का भाव बढ़ा है, वे समाज के साथ समरूप, समरस हुए हैं।

(II) समाज पर प्रभाव

1- अच्छी परम्पराओं की समझ बढ़ी है, जैसे पदयात्रा, धराड़ी, जोहड़, देवबनी आदि की पुनः प्रतिष्ठा।
2- काम के प्रति निष्ठा बनी है, उसे अपना समझकर श्रमदान से स्वयं करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।
3- निर्णय क्षमता बनी है तथा ग्राम सभा, लोकसमिति, महिला समूह, जैव संरक्षण संसद, अरवरी

ग्रामस्वराज्य संसद आदि संगठनों के माध्यम से निर्णय में लोगों की भागीदारी बढ़ी है। लोगों ने अपने कानून-कायदे बनाकर अपने संसाधनों का संरक्षण शुरू किया है।

4- प्राकृतिक संसाधनों का रखरखाव व उपयोग के बारे में समझ बढ़ी है। जैव संरक्षण संसद, अरवरी ग्राम स्वराज्य संसद इसका परिणाम है।

5- ग्रामसभा के माध्यम से गाँव के संसाधनों पर बाहरी आक्रमणों पर रोक लगी है। संगठन के जरिये बाहरी भेड़ व ऊँटों से जंगल को बचाना, अपने जल-संसाधनों में पल रहे जल-जीवों को बचाना शुरु हुआ है।

6- गाँव के कामों का, दस्तूरों का, सभाओं का लेखा-जोखा रखने की प्रक्रिया शुरू हुई है।

7- ग्राम कोष के माध्यम से ग्राम स्वावलम्बन व ग्राम स्वराज्य को बढ़ावा देने की प्रक्रिया की शुरुआत।

8- समाज में भाई चारे की भावना बढ़ी है।

9- समाज के सभी वर्गों को आगे आने का मौका मिला है।

10- महिलाओं में जाग्रति बढ़ी है।

11- बाल विवाह में कमी आई है।

12- समाज में गलत व्यसनों तथा कुरीतियों पर रोक लगी है।

13- गाँव की आर्थिक स्थिति मजबूत बनी है।

14- स्वरोजगार के अवसर बढ़े हैं एवं पलायन रुका है।

15- परम्परागत चिकित्सा पद्धति द्वारा सेहत में सुधार हुआ है।

16- सरकारी विभाग ग्राम सभा के प्रति उत्तरदायी बने हैं।

17- अन्याय का प्रतिकार करने की शक्ति बढ़ी है।

18- भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण पाने की क्षमता बढ़ी है, संस्था, ग्रामसभा, लोकसमिति के कार्यों की पारदर्शिता से समाज में ईमानदारी से काम करने की आदत बनने लगी है।

(III) पारिस्थितिकी परिवर्तन

1- अलवर, जयपुर, दौसा, सवाईमाधोपुर, करोली क्षेत्र का बड़ा हिस्सा डार्क जोन बन गया था। वह अब सरकारी रिकॉर्ड में भी व्हाइट जोन में बदला है।

2- पाँच सूखी नदियां वर्ष भर सजल रहने लगी हैं।

3- कुओं का जल स्तर बढ़ा है।

4- भूमि का कटाव रुका है तथा जमाव कम हुआ है।

5- मिट्टी की नमी/उर्वरकता बढ़ी है।

6- उबड़-खाबड़ नालों को रोक कर खेती योग्य किया गया। खेती का क्षेत्रफल पाँच गुना बढ़ा है।

7- हरियाली बढ़ी है।

8- फसल-चक्र बदला, परती भूमि खेती के योग्य बनी तथा सब्जियाँ होने लगी हैं।

9- खेती से आय व रोजगार के साधन बढ़े हैं।

10- देशी बीजों का संरक्षण व कम्पोस्ट खाद का चलन बढ़ा है।

11- चारा व ईंधन में बढ़ोतरी हुई है।

12- जरूरत के हिसाब से सभी फसलें होने लगी हैं जो पानी के अभाव में नहीं होती थी।

13- जैविक विविधता का संतुलन बना तथा संरक्षण हुआ है ।

14- क्षेत्र का क्षरण घटकर मिट्टी की आर्द्रता व स्थायित्व बढ़ा है ।

(IV) पर्यावरणीय प्रभाव

1- लोगों में पर्यावरणीय चेतना बढ़ी है जिसके फलस्वरूप पर्यावरणीय परम्पराओं का पुनर्स्थापन हुआ है ।

2- खनन जैसी पर्यावरण विरोधी गतिविधियों पर रोक लगी है ।

3- पानी को रोकने के कारण बाढ़ का प्रभाव कम हुआ है ।

4- कम वर्षा होने पर भी उसके प्रभाव दिखते नहीं हैं । इस वर्ष वर्षा कम हुई है । फिर भी चारा-अनाज में कोई कमी नहीं आयी । जल स्तर बना हुआ है । पलायन आदि भी नहीं बढ़ा ।

5- क्षेत्र की जड़ी-बूटियों की पहचान समाज को बढ़ी तथा उनके उपयोग में वृद्धि हुई है ।

6- तिजारा क्षेत्र में प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के विरुद्ध वातावरण निर्माण में सफलता मिली ।

(V) सांस्कृतिक प्रभाव की शुरुआत

1- पानी की महिमा समाज में अच्छे से प्रतिष्ठित हुई है । जोहड़ों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि से यह दिखाई देती है ।

2- नदियों को तीर्थ मानते हुए उनकी पूजा होने लगी है ।

3- महिलाओं में कार्तिक स्नान जैसी टूटी हुई परम्परा पानी के आने से शुरू हुई है ।

4- प्राकृतिक प्रेम के पुण्य कार्यों में बढ़ोतरी हुई है ।

5- स्वयं करके खाने का भाव बढ़ा । कृतज्ञता भी आई है ।

6- समाज ने अच्छी परम्पराओं को पुनर्स्थापित किया है तथा बुरी परम्पराओं को तोड़ा भी है । जैसे बालविवाह, बालश्रम, नुक्ता, पर्दाप्रथा आदि ।

7- अंधविश्वास में कमी आई है ।

8- चोरी में कमी आई है ।

9- छुआछूत में कमी आई है । गरीब, पिछड़ों को अपना विकास स्वयं करने की ललक बढ़ी है ।

(VI) पशुओं पर प्रभाव

1- पानी व चारे की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता से पशुओं की मृत्यु दर में कमी आई है । पशुओं की सेहत में सुधार हुआ है । पशुधन की देखरेख में समाज की रुचि बढ़ी है ।

2- पशुधन में वृद्धि हुई है । बकरियाँ घटी और गाय, बैल, भैसों की संख्या बढ़ी है ।

3- दूध तथा दूध के उत्पाद में वृद्धि हुई है ।

4- पशुओं से आय में वृद्धि हुई है ।

5- पशुओं से गोबर खाद में वृद्धि हुई है ।

(VII) महिला व बच्चों पर प्रभाव

1- पानी की उपलब्धता से महिलाओं के कष्ट में कमी आई है ।

2- जंगल बचाने से ईंधन की सुविधा हुई है । जंगल बचाने में महिलाओं की अग्रणी भूमिका । इनका समय बचने लगा है, बचे समय में गाँव के सामलाती कार्य करने के निर्णय लेने लगी हैं । घर से बाहर के काम अब महिलायें करने लगी हैं ।

3- सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है ।

4- शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ा है जिससे बालकों के साथ-साथ स्कूल जाने वाली बालिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई है ।

5- समय की बचत होने से अब महिलाएं अपने बच्चों के साथ-साथ स्वयं के स्वास्थ्य पर भी ध्यान देती हैं।

6- स्कूलों में अब लड़कियों की संख्या अधिक बढ़ रही है। यह बढ़त दूसरे क्षेत्रों से चार गुणा अधिक है।

(VIII) राजनैतिक प्रभाव

1- ग्रामसभाओं के माध्यम से मतदाताओं में चेतना आई है तथा वे गाँव के विकास के प्रति भी सचेत रहते हैं । इस क्षेत्र के मतदाता अपनी पंचायत का प्रतिनिधि सोच समझकर चुनते हैं ।

2- जन प्रतिनिधियों का निर्धारण करने की स्वतन्त्रता का अहसास हुआ है ।

3- महिला प्रतिनिधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है ।

4- गाँव की समस्यायें लोगों की भागीदारी से सुलझने के कारण राजनेताओं का प्रभाव घटा है। लोग अपने काम स्वयं करने में विश्वास रखने लगे हैं ।

5- सरकारी धनराशि के सही उपयोग के प्रति लोग सचेत रहते हैं ।

6- अपने प्राकृतिक संसाधन बचाने हेतु अपने दस्तूर तैयार करने के लिये जल-संसद का गठन । इसकी मान्यता हेतु प्रयासरत है ।

7- प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कराने वाले नेताओं से लड़ाई लड़कर समाज ने सफलता पाई है। खनन बन्द होने से कई राजनेता निष्प्रभावी बने हैं ।

8- दो फसली जमीन को सरकारी अधिग्रहण से बचाने हेतु किसान एकता परिषद् का गठन किया है । तिजारा क्षेत्र में खेती की जमीन बचाने की सफलता अति महत्वपूर्ण है ।

9- सादगी-समानता की राजनीति को बढ़ावा देने का प्रयास शुरू हुआ है ।

(IX) सरकारी नीतियों पर प्रभाव

1- तरुण भारत संघ व समाज ने मिलकर राजस्थान के सात जिलों में जो काम किया है उसके परिणामों ने सरकारों को प्रभावित किया है। राज्य सरकार ने अब कई परियोजनायें लोगों के साथ मिलकर जल-जंगल-जमीन संरक्षण की शुरुआत की है ।

2- राजस्थान की प्रस्तावित जलनीति का प्रारूप बदलवाकर लोकोन्मुखी बनवाने में सरकार का सहयोग किया ।

3- भारत में नई जलनीति बनवाने के लिये भारत सरकार का सहयोग जारी है ।

4- भारत सरकार की कृषि नीति में परम्परागत खेती को बढ़ावा दिलाने का प्रयास महत्वपूर्ण है ।

5- जल ग्रहण विकास में लोक तकनीक, व लोक इंजीनियरिंग को अपनाने के लिये सरकार पर दबाव।

6- जैविक विविधता संरक्षण नीति में लोक ज्ञान, व लोक निर्णय को बढ़ावा दिलाने के प्रयास। ग्राम स्तर पर जैव संरक्षण अधिकार दिलाने का प्रयास जारी है ।

7- ग्रामीण समाज के परम्परागत कानून-दस्तूरों को मान्यता दिलाना । प्राकृतिक सीमाओं के अनुसार राजनैतिक एवं कार्य संचालन सीमाओं के निर्धारण की पहल ।

8- वन भूमि पर वन संरक्षण कार्य करने का समाज को अधिकार मिलना । सरिस्का वन भूमि पर जल संरक्षण कार्य हेतु राजस्थान सरकार का तरुण भारत संघ से निवेदन इसका बड़ा प्रमाण है ।

9- वन्यजीव संरक्षण में समाज की भागीदारी की जरूरत का सरकार को अहसास कराना ।

AUDITOR'S REPORT

We have audited the annexed consolidated Balance Sheet as at 31.03.99 and Consolidated Income & Expenditure account and Receipt & Payment account for the year ended on above date of **TARUN BHARAT SANGH, BHEEKAMPURA, KISHORI, ALWAR** and receipt & payment account of the Head Office of the Institution for the year ended on 31.03.99 with the books of accounts, vouchers and other relevant records produced before us for our verification.

We have checked the above as per informations and explanations given to us and certify that the said accounts reflects true and fair view of the state of affairs of the Institution in the case of Balance Sheet as on 31.03.99 and of deficit in case of income & expenditure account for the year ended on 31.03.99.

FOR **GOYAL ASHOK & ASSOCIATES**
Chartered Accountants

A.K. GOYAL
PARTNER

JAIPUR
DATED : 20 July, 1999

TARUN BHARAT SANGH, BHEEKAMPURA, KISHORI (ALWAR)
CONSOLIDATED BALANCE SHEET AS ON 31.03.99

LIABILITIES & CAPITAL	AMOUNT	ASSETS	AMOUNT
GENERAL RESERVE		**FIXED ASSETS**	
Opening Balance	83,37,254.98	As per Annexure "A"	63,24,872.94
Add : Capital Expenditure		Cash in Hand	4,16,545.35
during the year	1,61,149.50		
	84,98,404.48	**CASH AT BANK**	
Less : Deficit during		Alwar Bharatpur Gramin	
the year	26,576.90	Anchlik Bank, Kishori	
	84,71,827.58	A/c No. 764	1,62,909.50
UNUTILISED GRANT OF		A/c No. 1911	6,934.50
PROJECTS TO BE UTILISED		SBBJ, Thanagaji	671.67
IN NEXT YEAR'S		The Bank of Raj. Ltd.	25,89,743.90
ICCO., Netherland	18,23,904.50	PNB, Umrain	148.00
Embassy of Switzerland		Fixed Deposits	7,16,136.00
S.D.C. GTZ, New Delhi	1,187.00	The Bank of Raj. Ltd. Riwali	516.00
Inter Co-operation,			
Switzerland	2,92,803.50	**LOANS & ADVANCES TO**	
Embassy of Swedan (SIDA),		Staff & Workers	8,59,602.62
New Delhi	6,48,731.25		
		Grant Receivable from CSWB	1,97,898.00
Outstanding Expenses			
(Previous year)	8,943.15		
Jain Kirana & General Stores	25,481.50		
Goyal Ashok & Associates	3,100.00		
	1,12,75,978.48		1,12,75,978.48

NOTES ON ACCOUNTS AS PER ANNEXURE "B"

As per our report of even date

*For **Goyal Ashok & Associates***
Chartered Accountants

FOR **TARUN BHARAT SANGH**

A.K. GOYAL
PARTNER

GENERAL SECRETARY

JAIPUR
DATED : 20 July, 1999

TARUN BHARAT SANGH, BHEEKAMPURA, KISHORI (ALWAR)
CONSOLIDATED INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31.03.99

EXPENDITURE	AMOUNT	INCOME	AMOUNT
To **PHYSICAL WORK**		By **Unutilised Balance b/f**	1,179.50
Earthan Dam/Anicut		By **CONTRIBUTION FROM**	
Johad	30,94,421.25	Inter Co-operation,	
Plantations	2,48,191.00	Switzerland	4,91,000.00
Entry Point Activities	82,746.00	ICCO., Netherland	66,05,750.00
		S.D.C. Embassy of	
To **TRAINING PROGRAMME**		Switzerland	6,75,050.00
Field Staff Development		OXFAM India Trust	2,50,000.00
Training	3,72,641.00	Central Social Welfare	
Lok Samiti Management		Board	2,86,720.00
Training	36,166.00	Lok Zumbish Parisad	2,80,000.00
Women Group Training	46,375.00	Embassy of Swedan (SIDA),	
Animal Husbandry Training	62,822.00	New Delhi	20,00,000.00
To **AWARENESS CUM RESOURCES PROGRAMME**		By Miscellaneous/Other Receipts	9,111.00
Camp, Workshop Expsure		By Tractor Activity	26,537.00
Visit, Footmarch,			
Village Meeting	12,29,380.00	By Bank Interest	4,950.00
To **DOCUMENTATIONS**		By Award/Prize	60,000.00
Case Study, Books			
Poster Printing		By Sale of Books	25.982.00
Photography			
Documentry Film	6,06,899.00	By **AMOUNT CHARGED FROM VARIOU PROJECTS**	
To Demonstration Camp	9,000.00	Food arrangement	8,57,353.00
		Transportation	18,330.00
To **HEALTH PROGRAMME**		Jeep Fare	5,700.00
Medicine	17,933.50	Building Rent	30,000.00
Nutrition	1,26,729.75		
		By Deficit	26,576.90
To Donation	10,793.00		
To Lodging & Boarding	3,52,738.05		
To Agriculture Expenses	9,765.50		

Contd.....2

EXPENDITURE	AMOUNT	INCOME	AMOUNT
To **ADMINISTRATIVE EXP.**			
Honorarium & Stipend	13,19,602.00		
Vehicle Running & Maintenance	5,60,329.90		
Travelling Exp.	1,55,968.60		
Stationery & Postage	39,021.00		
Office Expenses	24,823.50		
Overhead Expenses	66,046.00		
Electricity & Light Exp.	22,397.00		
Educational Material	4,959.50		
Fuel Expenses	21,035.50		
Audit Fees	20,000.00		
Insurance Expenses	36,515.00		
Telephone Expenses	4,039.50		
Misc. Expenses	25,354.50		
Bank Commission	9,671.00		
Legal Expenses	6,000.00		
To Grant Return to Health & Family Welfare Ministry	1,04,000.00		
To **CAPITAL EXPENDITURE TRANSFERRED TO GENERAL RESERVE**			
Equipments	26,665.00		
Land & Building	57,143.50		
Furniture	68,439.00		
Machinery	8,034.00		
Utensils	868.00		
To Unutilised Amount of Project to be utilised in next year(s)	27,66,626.25		
	1,16,54,239.80		1,16,54,239.80

As per our report of even date

For Goyal Ashok & Associates
Chartered Accountants

FOR **TARUN BHARAT SANGH**

A.K. GOYAL
PARTNER

GENERAL SECRETARY

JAIPUR
DATED : 20 July, 1999

TARUN BHARAT SANGH, BHEEKAMPURA, KISHORI (ALWAR)

CONSOLIDATED RECEIPTS & PAYMENTS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31.03.99

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT
To **OPENING BALANCE**		By **PHYSICAL WORK**	
Cash in hand	3,17,784.25	Earthan Dam/Anicut	
Cash at Bank		Johad	30,94,421.25
The Bank of Raj. Ltd. Jpr.	1,179.90	Plantations	2,48,191.00
Alwar Bharatpur Anchlik Gramin Bank, Kishori		Entry Point Activities	82,746.00
A/c No. 764	7,78,136.50		
A/c No. 1911	28,561.50	By **TRAINING PROGRAMME**	
Fixed Deposit	7,15,715.00	Field Staff Development Training	3,72,641.00
SBBJ. Thanagaji	671.67	Lok Samiti Management Training	36,166.00
PNB, Umrain	148.00	Women Group Training	46,375.00
		Animal Husbandry Training	62,822.00
To **CONTRIBUTION FROM**			
Inter Co-operation, Switzerland	4,91,000.00	By **AWARENESS CUM RESOURCES PROGRAMME**	
ICCO., Netherland	66,05,750.00	Camp, Workshop Exposure, Visit	
S.D.C. Embassy of Switzerland	6,75,050.00	Footmarch, Village Meeting	12,29,380.00
OXFAM India Trust	2,50,000.00		
Central Social Welfare Board	1,57,360.00		
Lok Zumbish Parisad	2,80,000.00	By **DOCUMENTATIONS**	
Embassy of Swedan (SIDA) New Delhi	20,00,000.00	Case Study, Books, Poster Printing	
		Photography, Documentry Film	6,06,899.00
To Miscellaneous/Other Receipts	9,111.00	By Demonstration Camp	9,000.00
To Tractor Activity	26,537.00	By **HEALTH PROGRAMME**	
		Medicine	17,933.50
To Bank Interest	4,950.00	Nutrition	1,26,729.75
To Award/Prize	60,000.00	By Donation	10,793.00
To Sale of Books	25,982.00	By Lodging & Boarding	3,27,256.55
To Loan Return from Workers	40,579.00	By Agriculture Expenses	9,765.50
To **AMOUNT CHARGED FROM VARIOUS PROJECTS**		By **ADMINISTRATIVE EXP.**	
Food Arrangement	8,57,353.00	Honorarium & Stipend	13,19,602.00
Building Rent	30,000.00	Vehicle Running & Maintenance	5,60,329.90
Transportation	18,330.00	Travelling Exp.	1,55,968.60
Jeep Fare	5,700.00	Stationery & Postage	39,021.00
		Office Expenses	24,823.50
		Overhead Expenses	66,046.00
		Electricity & Light Expenses	22,397.00

Contd.....2

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT
		Educational Material	4,959.50
		Fuel Expenses	21,035.50
		Audit Fees	20,000.00
		Insurance Expenses	36,515.00
		Telephone Expenses	4,039.50
		Misc. Expenses	25,354.50
		Bank Commission	9,671.00
		Legal Expenses	3,000.00
		By Grant Return to Health & Family Welfare Ministry	1,04,000.00
		By Outstanding Exp. of Previous Year	37,590.85
		By Advance to Workers	5,89,671.00
		By **CAPITAL EXPENDITURE**	
		Equipments	26,665.00
		Land & Building	57,143.50
		Furniture	68,439.00
		Machinery	8,034.00
		Utensils	868.00
		By **CLOSING BALANCE**	
		Cash in Hand	4,16,545.35
		Cash at Bank	
		The Bank of Raj. Ltd. Jaipur	25,89,743.90
		Alwar Bharatpur Anchlik Gramin Bank, Kishori	
		A/c No. 764	1,62,909.50
		A/c No. 1911	6,934.50
		Fixed Deposit	7,16,136.00
		SBBJ. Thanagaji	671.67
		PNB., Umrain	148.00
		The Bank of Raj. Ltd., Riwali	516.00
	1,33,79,898.82		**1,33,79,898.82**

As per our report of even date

For ***Goyal Ashok & Associates***
Chartered Accountants

A.K. GOYAL
PARTNER

JAIPUR
DATED : 20 July, 1999

FOR **TARUN BHARAT SANGH**

GENERAL SECRETARY

TARUN BHARAT SANGH, BHEEKAMPURA, KISHORI (ALWAR)

FIXED ASSETS **ANNEXURE "A"**

PARTICULARS	BALANCE AS ON 01.04.98	ADDITION/SOLD DURING THE YEAR	TOTAL AS ON 31.03.99
Land & Building	24,22,159.97	57,143.50	24,79.303.47
Machinery	1,05,370.50	8,034.00	1,13,404.50
Electricity Fitting	51,320.80		51,320.80
Utensils	15,495.02	868.00	16,363.02
Cattles	4,225.00		4,225.00
Furniture	1,58,955.52	68,439.00	2,27,394.52
Surgical Equipments	3,11,860.43	26,665.00	3,38,525.43
Generator TV, VCR	1,02,481.85	—	1,02,481.85
Ambulance	2,31,000.00	—	2,31,000.00
Other Equipments	76,161.00	—	76,161.00
Motor Cycles	3,24,040.00	—	3,24,040.00
Fans	13,405.25	—	13,405.25
Typewriters	6,230.00	—	6,230.00
Musical Instruments	1,430.00	—	1,430.00
Tata Truck	2,98,972.00	—	2,98,972.00
Jeeps	9,53,682.00	—	9,53,682.00
Photo Copier	1,30,853.55	—	1,30,853.55
Tractors	5,02,041.00	—	5,02,041.00
Computers	2,81,188.00	—	2,81,188.00
Cameras	47,250.00	—	47,250.00
Cycle	1,030.00	—	1,030.00
Fax Machine	34,900.00	—	34,900.00
Gas Cylenders	8,092.80	—	8,092.80
Gysers	3,735.00	—	3,735.00
Mixer Grinder	3,200.00	—	3,200.00
Spining Machine	65,000.00	—	65,000.00
Carpet	9,643.75	—	9,643.75
	61,63,723.44	1,61,149.50	63,24,872.94

FOR **TARUN BHARAT SANGH**

GENERAL SECRETARY

TARUN BHARAT SANGH,
BHEEKAMPURA (KISHORI)

ANNEXURE "B"

NOTES ON ACCOUNTS FORMING PART OF BALANCE SHEET AS AT 31.03.99

1. The accounts are being prepared on historical cost basis and as a going concern. Accounting policies not referred to otherwise are in consistent with the generally accepted accounting principles.

2. The accounts are being prepared on accrual basis.

3. The Head Office of the Institution has charged certain amounts from various projects details of which is as under :

a.	Lodging & Boarding	Rs. 8,57,353.00
b.	Transportation	Rs. 18,330.00
c.	Building Rent	Rs. 30,000.00
d.	Jeep Fare	Rs. 5,700.00

4. No depreciation has been charged on the fixed assets.

5. Project ICCO has been sanctioned for three years. Hence, grant of Rs.27,26,250.00 received on 20.01.99 from the said funding agency has to be utilised in the span of three years. Accordingly, unutilised balance as on 31.03.99 Rs.18,23,904.50 has been c/f to be utilised in next years.

FOR **TARUN BHARAT SANGH**

GENERAL SECRETARY

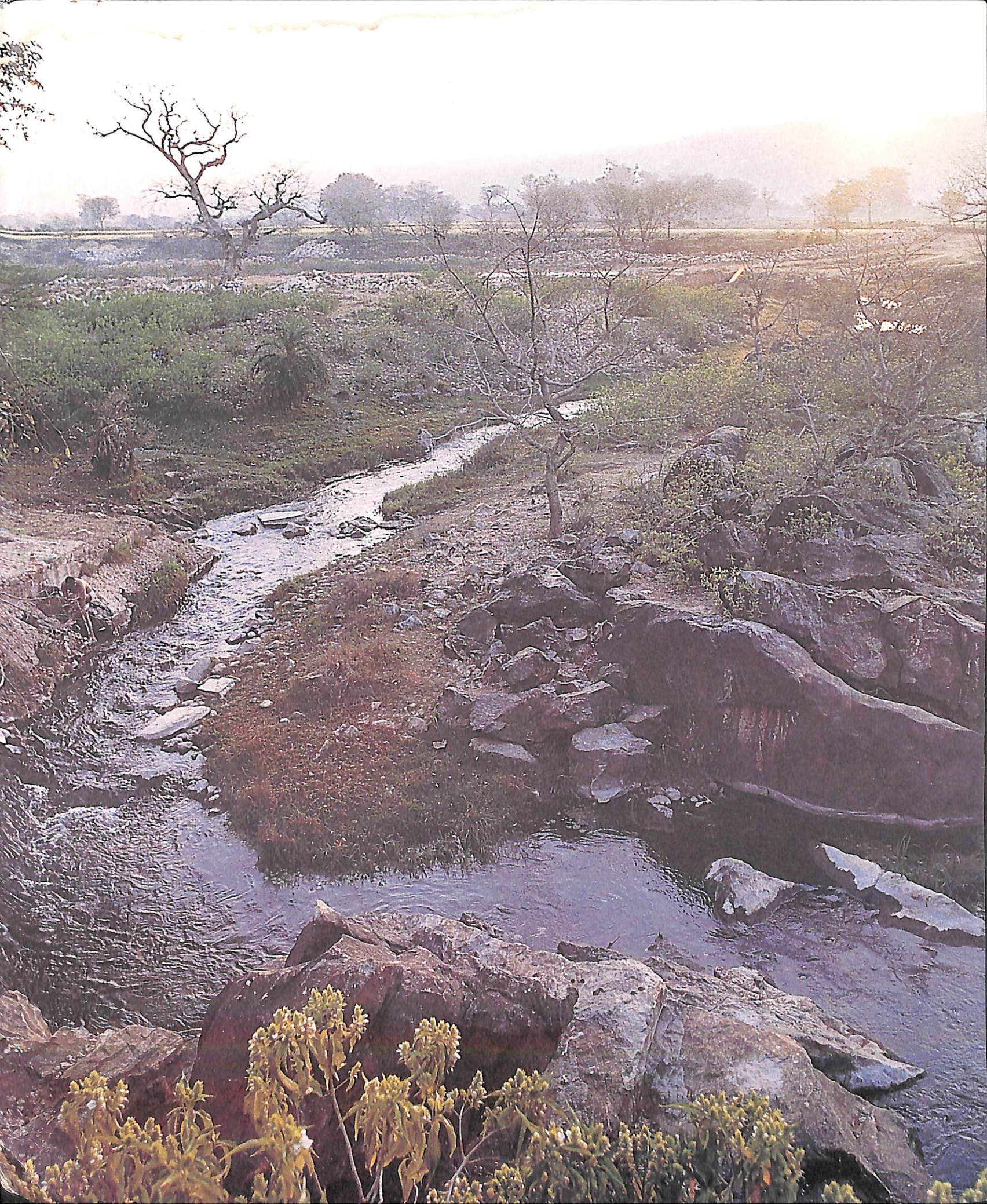

मुद्रक : कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर